Postal Registration No. CHD/0107/2015-2017

RNI No. CHABIL/2000/3469

हिन्दी/अंग्रेजी मासिक पत्रिका

दीन बन्धु सर छोटूराम

जाट लहर

जाट सभा, चण्डीगढ़ के सौजन्य से प्रकाशित

o"k 14 v.d 06 | 30 tu 2015 | eY; 5 #i;s

प्रधान की कलम से

तीसरा मोर्चा बनाम भारतीय राजनीति

डा. महेन्द्र सिंह मलिक

विश्व के सबसे बड़े प्रजातंत्र की मतदान व्यवस्था और मतदाता की भूमिका दोनों विश्व को विस्मत करते हैं। भोला-भाला मतदाता आखरी पल तक अपने मतदान की गोपनीयता को बनाए रखता है ओर अपने मताधिकार का पूर्ण इस्तेमाल करता है। प्रथम मतदान क्योंकि स्वतंत्रता संग्राम के बाद मिली ताजा आजादी के चलते काग्रेस का एकछत्र साम्राज्य था लेकिन धीरे-धीरे यह एक पारिवारिक पार्टी बनती गई और विपक्ष अपने जड़ें जमाता गया। वर्ष 1970 में कांग्रेस के विघटन से कांग्रेस (ओ) बनी जिसमें सभी वयोवृद्ध स्वतंत्रता संग्रामी थे और बंगलूर अधिवेशन में श्रीमति इंदिरा गांधरी ने अपने नाम से कांग्रेस (आई) बना ली जिसका स्वतंत्रता संग्राम से कोई लेना देना ना था लेकिन जोड़ तोड़ कर उन वयोवृद्ध नेताओं को धूल चटा दी। अब यह एक परिवार की पार्टी बनकर रह गई। श्रीमती इंदिरा गांधी ने शुरू-शुरू में बैंकों के राष्ट्रीयकरण तथा प्रीवी पर्स समाप्त करने जेसे कुछेक ऐतिहासिक फैसले लिए और 1971 में पाकिस्तान के दो टुकड़े करवा एक लौह-नेता के रूप में उभरी लेकिन जल्द ही एक तानाशाह बन बैठी। 25 जून 1975 में आपातकाल घोषित कर सत्ता पर जमे रहने का प्रयास किया और 'बहुजन हिताय-बहुजन सुखाय' का नारा देकर 'बहुजन हटाए, बहुजन सताए' बना दिया। गरीबी दूर करते करते गरीब दू कर दिया। राजकीय कोष को भारी क्षति पहुंचाई। पहली बार बुलीयन एक्सपोर्ट की प्रथा डाली जिस पर राष्ट्र की मुद्रा का आधार रहता है और इसी आधार पर दूसरी मुद्राओं से विनमय दर निर्धारित होती है तब बुलीयन आरक्षित सोने चांदी के भंडारों का निर्यात किया गया, जिस गलत नीति का खामियाजा राष्ट्र आज भी भुगत रहा है। नसबंदी में जबरन बच्चों, नि:संतान युवाओं और बूढों की नसबंदी करवा दी गई। एक अच्छी शुरूआत को गर्त में डाल दिया।

लोक सभा चुनाव 2014 जनता का आक्रोष उभरा - श्री जय प्रकाश नारायण एक छत्र नेता बन उभरे। कम्युनिष्टों को छोड़कर करीब सभी पार्टीयों के एक गठबंधन से जनता पार्टी बनी और मतदाता ने महाबली तानाशाह को एक साधारण व्यक्ति राज नारायण के हाथों धूल चटा दी। जोड़ तोड़ में माहिर सत्ता की भूखी तानाशाह ने वयोवृद्ध नेताओं को फिर से एकजुट किया जो उसकी चाल को समझा ना पाए और एक-एक कर सरकारें बनवाना और तोड़ना एक शौक की तरह पाल लिया। रोज रोज की लघु समय की सरकारों से अजिज मतदाता ने उसे पुन: सत्ता सौंप दी लेकिन उसने जल्द ही रंग दिखाना शुरू किया जिसका इतिहास गवाह है और वह तानाशाह धराशाही हो गई लेकिन उसमें राजनीति में नए और साफ छवि के रूप में राजीव गांधी उभरे। राजनैतिक नौसिखीए नेता जल्द ही चापलूसों से घिर गए और अपनी ही गलतियों के शिकार हो गए। उन्होने आंध्र प्रदेश में श्री एन टी रामाराव की सरकार जो विधिवत चुनी गई थी, को तोड़ दिया और जम्मू काश्मीर में श्री फारूख अब्दूला की सरकार को भी तोड़ दिया। श्री रामाराव की सरकार विपक्ष की एकता और राष्ट्रपति के दखल से पुन: स्थापित हो गई और जम्मू काश्मीर के नव युवकों ने हथियार उठा लिए जिसकी गर्मी राष्ट्र आज भी भुगत रहा है। पंजाब की दास्तान किसी से छुपी नहीं। हजारों नव युवक किसी ना किसी आड़ में मारे गए। सबसे प्रगतिशील राज्य अपनी विकास की गाड़ी ही गंवा बैठा। हिंदू-सिक्खों के रोटी बेटी के रिश्ते में भी दरार आ गई। यहां यह बताना भी तर्कसंगत होगा कि अकाली दल की न्यायिक सरकार को तोड़कर श्री गुरनाम सिंह के बदले श्री लक्ष्मण सिंह गिल को थमा अल्प अवधि में ही पांव से पटड़ा खींच लिया। तत्कालीन वित्त मंत्री डा0 जगजीत सिंह एक राष्ट्रवादी से तथाकथित खालिस्तान के स्वंयभू राष्ट्रपति बन बैठे। इसमें पाकिस्तान खुलकर खेला, खामियाजा भी भुगता तथा आज तक तीन युद्धों में करारी मात खाने के उपरांत भी आज छदम युद्ध लड़ रहा है।

'k"k i:t &2 ij

आवश्यक सूचना

जाट सभा चंडीगढ़/पंचकूला की मासिक पत्रिका 'जाट लहर' में जुलाई 2015 में प्रकाशित किये जाने वाले 'प्रधान की कलम' से कालम में 'योग बनाम आधुनिक राजनीति' विषय पर लेख लिखा जायेगा। इसलिये आप से निवेदन है कि इस विषय पर अपने सक्षिप्त विचार व सुझाव भेजने की कृपा करें ताकि आपके विचार इस लेख में सम्मवित किये जा सके।

'k"k i!t&1

अब हमारा विषय भारतीय राजनीति पर है इसलिए हम चौधरी देवीलाल जैसे नेता के उद्भव की दास्तान देखते हैं। चौधरी देवीलाल के प्रयासों से जनता दल का राष्ट्रीय फ्रंट बनाया गया था जिसमें श्री एन टी रामाराव को अध्यक्ष व श्री वी पी सिंह को इस फ्रंट का कनवीनर बनाकर वर्ष 1989-90 में केंद्र में तीसरे मोर्चे की सरकार का गठन किया। चौ0 देवीलाल की संगठनात्मक क्षमता कमाल की थी। दुश्मन भी उनकी इस कला के कायल हुए बिना नहीं रह सकते थे। उन्हे सज़ा का लोभ कभी ना था इसलिए प्रधानमंत्री का अपना ताज श्री वी पी सिंह के सिर पर रख दिया जो शायद उनकी भूल थी। प्याज के छिलके ना छेड़े तो ही भला होगा। श्री नरसिज़्हा राव की कांग्रेस सरकार अल्पमत में रही लेकिन श्री भजनलाल की खरीद फरोज़्त, हरियाणा के आया राम, गया लाल की कहानी ने पांच साल तो निकाल दिए लेकिन राजनीति को भ्रष्टाचार के कूंए में डाल दिया। श्री अटल बिहारी वाजपेयी की सरकार में बहुत अच्छे और गठबंधन धर्म को निभाते हुए काम हुए जिसमें काश्मीर से कन्याकुमारी तक प्रधानमंत्री सड़क योजना जैसी महत्वपूर्ण परिणिति रही। किन्ही कारणों से सज़ा पुनः गांधी परिवार के हाथ में आ गई। दस वर्ष तक श्री मन मोहन सिंह जैसे अर्थ शास्त्री का चेहरा लगाकर श्रीमती सोनिया गांधी खुलकर खेली और सीबीआई को कांग्रेस बचाओ और पिंजरे में बंद तोते की संस्था का दुरूपयोग करके सर्व श्री औमप्रकाश चौटाला और अजय सिंह चौटाला जैसे नेताओं को झूठे-सच्चे केस बनाकर सलाखों के पीछे पहुंचा दिया।

मतदाता को विपक्ष लुभाने में कामयाब रहा जिसमें कांग्रेस का मोदी से राष्ट्र बचाओ अभियान ही श्री नरेंद्र मोदी के काम आई और भातीय जनता पार्टी की सरकार बन गई। श्री मोदी की चुनाव पूर्व घोषणाओं की समयबद्धता और हथेली पर सरसों जमाने की बातें उन्हे भारी पड़ रही हैं। उन्होने काफी प्रगतिशील निर्णय लिए हैं। विश्व में भारत की बिगड़ी छवि को सुधारा है। कांग्रेस द्वारा प्रायोजित वन रैंक वन पैंशन योजना आज उन्हे भारी पड़ती नजर आ रही है। दूसरे विश्वभर से निवेशकों को आमंत्रण तो दे दिया लेकिन भूमि अधिग्रहण में दिक्कतें उन्हे भारी पड़ती नजर आ रही हैं। निवेश तभी संभव होगा जब निवेशक को पूरी सहुलियतें मिलेंगी। चीन इसका उत्कृष्ठ उदाहरण है। कृषि और उद्योग दोनों विकास के पहीए हैं और दोनों को भूमि चाहिए जिसका सर्वमान्य सामाजस्य बैठाना होगा। हमारा मीडिया भी सकारात्मक भूमिका ना निभाकर केवल एक पक्षीय चल रहा है जिसका खामियाजा राष्ट्र भुगतेगा।

अभी बिहार में चुनाव के मद्देनजर पूर्व लोहिया परिवार या जनता परिवार पुनः इकट्ठा हो रहा है। लालू प्रसाद यादव व नीतीश कुमार जैसे चिर विरोधी श्री मुलायम सिंह यादव की मध्यस्ता से इकट्ठे हो रहे हैं और कांग्रेस की मदद से चुनाव लड़ने की बात कर रहे हैं जिसे तीसरे मोर्चे की संज्ञा दे रहे हैं। यदि कांग्रेस तीसरा मोर्चा है तो दूसरा कौन सा है? मतदाता शायद ही इसे माने। कांग्रेस का इतिहास है कि जिसे भी स्पोर्ट देकर सरकार बनाते हैं, निचोड़ने के बाद हाथ खींच लेते हैं। बिहार में सन् 2000 के लोकसभा चुनाव में लालू यादव के राष्ट्रीय जनता दल को 65 प्रतिशत यादव वोट मिले और 2014 के चुनाव में 64 प्रतिशत यादव मत प्राप्त हुए जबकि एनडीए को वर्ष 2009 में उच्च जातियों के 65 प्रतिशत व 2014 के लोकसभा चुनाव में 78 प्रतिशत मत प्राप्त हुए। इससे संदेश मिलता है कि बिहार में नितीश व लालू यादव का मोर्चा भी सफल होना मुश्किल है।

आज भी थर्ड फ्रंट के नाम पर पहले फ्रंट में कांग्रेस व दूसरे में बी जे पी में सज़ा का संघर्ष है जिसमें सीपीआई (एम) व सी पी आई मौका प्रस्त रहेगें। थर्ड फ्रंट, नवगठित जनता परिवार का विचार है कि सज़ासीन बी जे पी दोबारा सज़ा में आने की स्थिति में नहीं होगी। इसलिए लोकतांत्रिक व सकुलर पार्टियां बी जे पी से दूरी बनाए रखेगीं। इसके इलावा सीपीआई (एम) व सी पी आई में स्वस्थ चित तज़व प्रकतिशील लोकतंत्र सरकार की संभावनाएं भी तलाश रहे हैं जोकि सरकार का हिस्सेदार बनने पर भी विचार कर सकते हैं। प्रस्तावित तीसरे मोर्चे में इस समय ए आई डी एम के, टी डी पी, टी आर एस, जनता दल (एस) आदि ही मुज़्य दल हैं। लालू व नीतीश की मजबूरी में आई जोड़ी से घटक दल वाकिफ हैं और इन सभी का प्रयास बहुजन समाज पार्टी सुप्रीमों सुश्री मायावती को अपने संघ मिलाने का रहेगा और यह तभी संभव होगा जब इनको प्रधानमंत्री के पद का भरोसा दिलाया जाएगा। चुनाव के नतीजों के अनुसार कांग्रेस व बी जे पी को भी अगर सुश्री मायावती की आवश्यकता पड़ी तो प्रधानमंत्री पद के लिए वह तीसरे मोर्चे को छोड़ सकती है। इस अवस्था में सीपीआई (इलैक्षनिष्ट)उज़र प्रदेश में कुछ सीटों के लेन-देन करके आगे आ सकती है। जननायक ताऊ देवीलाल स्तर का कोई भी संगठनात्मक नेता सामने आता दिखाई नहीं दे रहा। चौधरी औमप्रकाश चौटाला अभी जेल में है जिनकी भूमिका सीमित होगी। ममता बैनर्जी, जयललिता का साथ मिलना मुश्किल है। पंजाब अकाली दल-भारतीय जनता पार्टी का हाथ छूटते अपने बलबूते सरकारी सज़ा में नहीं रह सकता और कांग्रेस पंजाब में आने से कोई रोक नहीं पाएगा। ज़्या कौमनिष्ट जो खुद अपना अस्तित्व तलाश रहे हैं वे कोई सकारात्मक भूमिका निभा पाएंगें जैसे अनउज़र प्रश्र भी अभी बाकी हैं।

सज़ासीन बीजेपी को भी आगामी चुनाव में घटक दलों को मिलाना होगा। बीजेपी व इसकी अवतार भारतीय राष्टीय स्वयं सेवक संघ का आरंभ से ही गठबंधन रहा है जिन्होने जनता पार्टी के साथ विलय तक कर लिया, लेकिन आज दोनों दलों में राजनीति की अपेक्षा सिद्धांतवाद ज्यादा हावी हो रहा है। बीजेपी को यह भी आभास होने लगा है कि इसके सज़ासीन होने से हिंदु राष्ट्र का युग आरंभ हुआ है जबकि गत लोकसभा चुनाव में इसको केवल 31 प्रतिशत मत प्राप्त हुए थे। इस प्रकार अल्पसंज़्यक मतदाताओं के बहुसंज़्यक पर हावी होने से बीजेपी के साथ धर्म निरपेक्ष दलों के इकट्ठा होने के कम आसार हैं और काफी मजबूरी में ही इनके एक होने की संभावना बन सकती है। इसके साथ ही आज केवल लौकिक बनाम अलौकिक ताकतें ही राजनीति का मुद्दा नहीं हैं। कुछ दसक पहले तक कांग्रेस द्वारा धर्म निरपेक्षता सहारा लिया जाता रहा जो कि इसके लिए काफी फायदेमंद रहा और इसमें अन्य समाजवादी केंद्रीय दलों को भी उचित स्थान दिया गया था लेकिन आज कांग्रेस पार्टी की धर्म निरपेक्षता व समाजवाद की छवि खत्म हो चुकी है जो कि किसी भी दल के लिए आज की अहम् जरूरत है।

निसंदेह आज बीजेपी हिंदूत्व के प्रचारकों के इलावा पुंजीपति वर्ग की भी सहायक बन रही है। गत एक वर्ष से बीजेपी

का मुज़्य कार्य भूमि और श्रमशक्ति को पुंजीपति वर्ग को सौंपने का रहा है। भूमि अधिग्रहण व श्रम सुधार जिसके स्पष्ट प्रमाण हैं। इसलिए आज कमजोर और हासिये पर आ चुके सामाजिक व आर्थिक तौर से पिछड़े समस्त दलों का एक गठबंधन के तौर पर इकट्ठा होना जरूरी है। अभी बिहार का नव निर्मित जनता परिवार एवं तीसरा मोर्चा केवल बिहार चुनाव तक ही सीमित है। इन सभी घटक दलों को बिहार के चुनाव व बाद में उज़र प्रदेश व राष्ट्र के सभी राज्यों में मजबूत व संयुक्त तीसरा मोर्चा बनाना होगा। आज मुज़्य घटक दलों – टीएमसी की ममता बैनर्जी, एआईडीएमके की सुश्री जय ललिता, बीएसपी की सुश्री मायावती, टीडीपी के चंद्रबाबू नायडू, बीजेडी के नवीन पटनायक, सीपीआई व सीपीआईएम आदि मुज़्य दलों को अकाली दल पंजाब से सरदार प्रकाश सिंह बादल, हरियाणा आईएनएलडी से चौ0 औमप्रकाश चौटाला जैसे प्रभावशाली नेताओं को साथ मिलाकर एक मजबूत जनता परिवार का गठन करना ही पड़ेगा। इसके बगैर ना तो कोई कारगर विकल्प बन सकता है और ना ही सज़ासीन बीजेपी/एनडीए सरकार को आगामी चुनावों में इसकी जमीनी हकीकत दिखाई जा सकती है। यह इसलिए भी महत्वपूर्ण है कि एक मजबूत गठबंधन के अभाव में बीजेपी अल्पसंज़्यक मुस्लिम वर्ग के खिलाफ गैर राष्ट्रीयता की भावना का प्रचार करके धर्म के नाम पर हिंदू मतदाताओं को भड़का सकती है जैसा कि इसके द्वारा गत लोकसभा चुनावों में किया जा चुका और यह आगे भी सैकुलर व सोशलिस्ट दलों का गलत कार्ड खेलकर दोहराया जा सकता है। धर्म व जातिवाद के नाम पर ही बीजेपी उज़र प्रदेश जैसे मुस्लिम प्रदेश में 80 में से 73 लोकसभा सीट जीत गई और बिहार में एनडीए गठबंधन ने 40 में से 31 सीटों पर कज़्ज़ा कर लिया और बीजेपी टिकट पर एक भी मुस्लमान सांसद चुनाव नहीं जीता है। इस प्रकार की जातिगत व धर्म पर आधारित राजनीति से छुटकारा पाने के लिए भी तीसरे मोर्चे का गठन आवश्यक है।

भारतीय मतदाता का अगर रूझान देखें तो यहां सभी एक पार्टी को अछूत घोषित कर अभियान चलाते हैं और अछूत घोषित पार्टी सज़ासीन हो जाती है ज़्योंकि आज तक कांग्रेस बीजेपी का हौवा दिखाकर मुस्लिम वोट लेती रही। जाने-अनजाने में ही हिंदू मतदाता ने कांग्रेस के विरूद्ध मतदान किया। अब मुस्लिम मतदाता को भी कांग्रेस का छदम भेष समझ में आ गया तथा तथाकथित सैकूलर शक्तियां वास्तव में कांग्रेस के पदचिन्हों पर चलकर जाति महजब की राजनीति कर रही है। मुस्लिम मतदाता के अब कई पैरोकार बन बैठे हैं। प्रबुद्ध मतदाता अब किसी के बहकावे में नहीं आ रहा। अखिल भारतीय लोकदल एक राष्ट्रीय पार्टी है जिसकी वास्तविकता सैकूलर है, ज़्या यह कांग्रेस का साथ ले या दे पाएगी। चौटाला जी का मानना है कि राजनीति में पक्के दोस्त या दुश्मन नहीं होते और जरूरत पर किसी की मदद ली या दी जा सकती है। मतदाता इसे भी मौका परस्ती मान सकता है। लालू प्रसाद की यह दुर्दशा बिहार में ही दो बार हो चुकी है। तथाकथित थर्ड फ्रंट कौमनिष्टों की तरफसे किए गए प्रयास है। प्रथम प्रधानमंत्री श्री वी पी सिंह की सरकार में वे भागीदार थे और उसकी बाद एच डी देवेगौड़ा, आई के गुजराल की सरकार में भी रहे, हर बार वे अपना हक वसूलते रहे।

श्री नरेंद्र मोदी की कार्यशैली में कुछेक मतदाता श्रीमती इंदिरा गांधी से समानता देख रहा है। बीजेपी पर भी आरोप लगने शुरू हो गए हैं लेकिन श्री मोदी की छवि ज़्लीन है। अभी तक कोई घोटाला नहीं हुआ जब कि पूर्व की युपीए सरकार में नित नए सूरज नित नये घोटाले उजागर होते रहे हैं। मतदाता ने अभी उसे माफ नहीं किया है। वर्तमान एनडीए सरकार की विकास की गति धिमी होने के साथ साथ इसके दो केन्द्रिय मंत्री - श्रीमती सुशमा स्वराज और श्री मनोहर परिकर भी विवादो से घिरे हुये हैं । इसी प्रकार राजस्थान की मुज़्यमंत्री महोदया व महाराष्ट्र की एक मंत्री महोदया के उपर भी आरोप जडे जा रहे है अतः इन नेताओं पर लगे संगीन आरोप श्री नरेन्द्र मोदी की छवी पर प्रहार कर रहे है । फिर भी राजनैतिक पंडित शंका व्यक्त कर रहे हैं कि जिसने भी कांग्रेस का साथ दिया या लिया, उसका बंटाधार ही होगा लेकिन मतदाता ने अपने पज़े नहीं खोले हैं। बिहार चुनाव ही राजनीति का नया मार्गदर्शन करेगा। कौमनिष्टों के इस गठबंधन में क्षेत्रीय पार्टियां आई थी जिसे वे थर्ड फ्रंट की संज्ञा देते हैं। ममता बैनर्जी ने इसे उनका दिव्य स्वप्न कहा था ज़्योंकि उनके अनुसार कौमनिष्ट बिना जिज़्मेवारी अपनी आवाज बुलंद करते हैं जबकि कौमनिष्टों का मत है कि क्षेत्रीय पार्टियों के पास लोकसभा की आधी से अधिक सीटे हैं और इस तरीके से वे अपनी आवाज राष्ट्रीय स्तर पर पहुंचा सकते हैं। ऐसे प्रयास हुए भी हैं और हर बार विफल हए हैं ज़्योंकि क्षेत्रीय पार्टियों का एजेंडा भी क्षेत्रीय ही होता है और राष्ट्रीय स्तर पर उनके आपसी हितों के टकराव से इसमें अज़्सर विघटन होते रहे हैं।

इतिहास ग्वाह है कि अज़्सर क्षेत्रीय पार्टियां तथा कौमनिष्ट एक बरसाती मेंढक की तरह तीसरे फ्रंट की बात हर चुनाव से पूर्व करते हैं लेकिन यहां भी उन्हे कहीं दूसरों को देने की बात आती है वे कन्नी कतरा जाते हैं। केरला में ऐसा दो बार हो चुका है। कर्नाटक के मुज़्यमंत्री रहे कुमार स्वामी देवगोड़ा पूर्व प्रधानमंत्री के पुत्र 10 जनपथ पर युपीए को स्पोर्ट देने हेतू मूंह ढांपकर आए थे। ऐसे बहुत से उदाहरण हैं, जहां क्षेत्रीय पार्टियां आगे आई लेकिन वक्त पर किनारा कर गई। कांग्रेस और कौमनिष्टों ने सदैव अपने हित सर्वोपरि रखे और हर बार किसी न किसी बहाने नाव मझधार में छोड़ चलते बने। ऐसे में मतदाता किस पर भरोसा करे, किसे छोड़े। मतदाता अपने पज़े आखरी पल तक नहीं खोलता और हर चुनाव में अप्रत्याशित नतीजें ही सामने आए हैं। अब की बार भी कोई विशेष रूझान सामने नहीं आ रहे और यही कहा जा सकता है कि तेल देखो, तेल की धार देखो।

वास्तव में आज आमजनता का वर्तमान राजनीति और राजनेताओं से मौह भंग होता जा रहा है। यदि श्री अरविन्द केजरीवाल मुज़्यमंत्री दिल्ली सरकार अपनी कार्यकुशलता का सही ढंग से प्रयोग करते हुये आगामी पांच वर्षो तक अपनी स्थिरता व कुशल प्रशासन कायम रखने में सफल हो जाते हैं तो देश के किसी भी राज्य में नया चमत्कार हो सकता है।

डा0महेन्द्र सिंह मलिक
आई0पी0एस0(सेवा निवृत)
पूर्व पुलिस महानिदेशक एवं
राज्य चौकसी ज़्यूरो प्रमुख, हरियाणा
प्रधान, जाट सभा चंडीगढ़ / पंचकुला एवं
अखिल भारतीय शहीद सज़्मान संघर्ष समिति

किसानों की मौत का सफर कब थमेगा ?

& Mkå Kku çdk'k fiykfu;k ¼iol lkIn½

आज, देश सद्मे में है। 22 अप्रैल 2015 को, आम आदमी पार्टी की किसान रैली में, राजस्थान के नांगल झामरवाड़ा के किसान गजेन्द्र सिंह कल्याणवत द्वारा खुदखुशी करना, एक हृदय–विदारक त्रासदी है। किसान का शव फंदे से लटकता रहा और आम आदमी पार्टी के नेता भाषणबाजी करते रहे। परन्तु, न किसी नेता को शर्म आई, न किसी के आंसू आए। विडंबना हैं कि एक किसान उस रैली में खुदकुशी कर लेता है, जो किसानों के सवाल के लिए ही बुलायी गई थी। वह भी मुल्क की सबसे बड़ी पंचायत यानी संसद के महज एक किलोमीटर के दायरे में, जंतर–मंतर पर। वह जगह जो लोकतांत्रिक प्रतिरोध का केन्द्र है। वह किसान खुद को अपनी ही बिरादरी की भीड़ के बीच अकेला पाता है। सियासत से अब उसका भरोसा उठ चुका है। फसल बर्बाद होने से मायूस होकर, रैली की भीड़ और पुलिस के देखते–देखते, वह एक पेड़ पर चढ़ जाता है उसकी डाल से लटक कर आत्महत्या कर लेता है। वह किसान की अन्तहीन व्यथा और निराशा का प्रतीक है। अपनी कुर्बानी से अतिवृष्टि से तबाह हुए देश के सैकड़ों किसानों की मौत से सुलग रही चिंगारी को गजेन्द्र सिंह ज्वाला का रूप दे गया। ऐसी ज्वाला जिसका धधकना आसानी से ठंड़ा नहीं होगा। 22 अप्रैल की तारीख इंसानियत के इतिहास में जिजीविषा के हार के लिए याद की जाएगी। आखिकार आतमहत्या निराशा की सूचक है।

गजेन्द्र सिंह की मौत ने सारे देश को झकझोर दिया है। यह ययावह है कि गजेन्द्र सिंह की शहादत के बाद, 24 घंटे की अवधि में ही, राजस्थान में, फसल बर्बाद होने के सदमें से, 3 और किसानों की मौत हो गई। आत्महत्या करने वाले ये किसान राजनीतिक तंत्रा तक अपनी आवाज पहुंचाने की कोशिश कर रहे थे, लेकिन उनकी मौतें भी संवेदनहीन हो चुकी व्यवस्था को तंद्रा से जगा नहीं सकीं। इससे तो इंकार नहीं किया जा सकता कि ऐसी स्थितियां आ गई हैं कि किसानों को अपनी बात कहने के लिए मौत को गले लगाना पड़ रहा है। प्रश्न यह है कि किसाान अकाल मृत्यु का यह अनवरत सफर, कैसे और कब रूकेगा? आज, गजेन्द्र सिंह की आत्महत्या ने किसानों की दुर्दशा को लेकर चल रही बहस को गंभीर मोड़ दे दिया है। इस घटना की एक उच्च स्तरीय जांच होनी चाहिए कि ऐसी कौन सी मजबूरियां थी, जिनके कारण गजेन्द्र सिंह को आत्महत्या करनी पड़ी। इस दुखद घटना के माहौल में हमें आपसी मतभेद भुलाकर ऐसे कदम उठाने चाहिए कि भविष्य में कोई दूसरा गजेन्द्र सिंह नहीं बने।

आज, राजनैतिक दलों के नेता, किसान गजेन्द्र सिंह के आत्महत्या प्रकरण को लेकर एक–दूसरे पर आरोप–प्रत्यारोप लगा रहें हैं। सड़क से लेकर संसद तक गजेन्द्र की मौत की गूंज छाई रही। सदन में इस घटना को लेकर गहरा दुख जताया गया। प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने बयान दिया। उन्होंने कहा, 'किसान गजेन्द्र की मौत पर उन्हें भी पीड़ा हैं किसानों की समस्या बड़ी पुरानी और व्यापक है, लेकिन किसान की जिदंगी से बड़ी कोई चीज नहीं है। किसानों की आत्महत्या देश के लिए एक चिंता का विषय है। इस समय देश की पीड़ा में वे भी शामिल हैं' मोदी ने कहा कि हम किसान को असहाय नहीं छोड़ सकते हैं। पिछली कमियों पर गौर करना बेहद जरूरी है। सब मिलकर संकल्प लें कि हम किसानों को मरने नहीं दें। काश, सियासी जुलमों से पेट भरता तो शायद गजेन्द्र सिंह जैसे लाखों किसान आत्महत्या का रास्ता नहीं अपनाते। होना तो यह चाहिए था कि संसद सत्रा के चलते सारा कामकाज रोककर सभी राजनीतिक दल इस बात पर चिंतन मनन करते कि फिर कोई और गजेन्द्र आत्महत्या को मजबूर नहीं हो।

राजनाथ सिंह (जो खुद एक किसान हैं) ने भी सांसद में किसानों की समस्याओं पर अपनी चिंता जताई। उन्होंने कहा भारत की 58 प्रतिशत जनसंख्या किसान हैं लेकिन जीडीपी में उनका योगदान जो 1950–51 में 55 प्रतिशत था, वह घटकर आज 14 प्रतिशत रह गया और गरीबी इतनी ज्यादा है कि 50 प्रतिशत से ज्यादा किसान खाद्य सुरक्षा पर आश्रित हैं। कृषि आय से किसानों की आर्थिक स्थिति नहीं सुधर सकती है, इसलिए सरकार उनके बच्चों में कौशल विकास को प्रोत्साहन दे रही है। क्या उनके आश्वासन से किसान के भूखे परिवार का पेट भर जाएगा?

आश्चर्य है कि राष्ट्र के कर्णधार, किसानों से 'मन की बात' करने वाले प्रधानमंत्री मोदी ने जुबानी जमाखर्च के इतर यह बतलाना मुनासिब नहीं समझा कि आत्महत्याओं को रोकने के लिए उनकी सरकार क्या कदम उठाने जा रही है। ऐसा नहीं हैं कि प्रधानमंत्री को यह पता नहीं है कि इस वर्ष के शुरू के पैंतालीस दिनों में केवल मराठावाड़ा में तिरानबे किसानों ने आत्महत्या की है। पिछले वर्ष यहां 569 किसानों ने आत्महत्या की थी। जब तमाम रास्ते किसानों के लिए बंद हो जाते हैं तभी वे यह बेहद दुखद कदम उठाते है। पर सरकारी मशनरी किसानों की सुध लेने के बजाय आंकड़ों की हेरफेर से यह दिखाने की कोशिश करती है कि आत्महत्या करने का कारण बर्बाद होना नहीं था।

ज्ञातव्य है कि हाल में राष्ट्रीय नमूना सर्वेक्षण के आकड़ों से पता चलता है कि मुल्क के कृषि आधारित परिवारों में से 52 फीसदी कर्ज के बोझ तले दबे हैं। आज आलम यह है के छोटे किसानों को सस्ता ऋण देने की कोई सरकारी

nl jk d fy, ogh pkgk tk re viu fy, pkgr gk &on 0;kl

योजना कारगार सिद्ध नहीं हुई और उन्हें महाजनों, आढ़तियों और व्यापारियों पर निर्भर रहना पड़ता है जो बड़ी ऊंची दरों पर कर्ज देते हैं। देश में लगातार बढ़ रहे किसानों के आत्महत्या के मामलों पर आरबीआई गर्वनर रघुराम राजन ने कहा कि कर्ज को बढ़ावा देकर किसानों की आत्महत्याएं रोकी जा सकती हैं। ऐसे मामलों को हल्के में नहीं लिया जा सकता। इसके पीछे केवल कर्ज का बोझ नहीं, बल्कि कर्ज मिलने में दिक्कत ज्यादा बड़ी वजह है। किसानों के लिये औपचारिक सिस्टम न होना एक बड़ी समस्या है।

एक अध्ययन के अनुसार 40 प्रतिशत किसान विकल्पहीनता की स्थिति में खेती कर रहे हैं। 'राष्ट्रीय किसान आयोग' के अनुसार तकरीबन 70 प्रतिशत किसान खेती छोड़ने के लिए तैयार हैं। सारे किसान आबादी कर्ज और घाटे की खेती से परेशान हो गई है। नया युवक इस खेती के धंधे में आना नहीं चाहता। ग्रामीण, शहरों की चकाचौंध देख शहरों की ओर भाग रहे हैं और जो बच रहे हैं वे बेमन से इस काम में लगे हैं। कोई भी किसान अपने बच्चे को किसान बनाना नहीं चाहता। गांव से जो निकल नहीं पा रहे, केवल वहीं कृषि वयवस्था में अटके हैं। आखिर क्या कारण है क्यों किसान खेती से बाहर आना चाहते हैं? अगर गांव में रोजगार के साधान नहीं होंगे, तो विस्थापन होगा ही। करोड़ों लोगों ने भागकर शहरों में सहारा लिया। किसानों का पलायन पंजाब से तमिलनाडु तक समान है।

'सेंटर फॉर स्टडी ऑफ डवलपिंग सोसाइटीज' के एक नए सर्वे में किसानों की समस्याओं के बारे में बताया गया है, जिससे किसान खेती से मुह मोड़ रहा हैं। सर्वे में 22 फीसदी किसानों ने खेती छोड़ने की इच्छा जताई है। 47 फीसदी किसानों का मानना है कि देश में कृषि की हालत ठीक नहीं है। वहीं 62 फीसदी किसान खेती छोड शहर में रहने को तैयार हैं, यदि उन्हें रोगार का जरिया मिल जाएं। 37 फीसदी ने बताया कि वे किसी हाल में अपने बच्चों को खेती नहीं करने देंगे। इसका कारण्रा यह नहीं है कि उन्हें खेती पंसद नहीं है। उन्हें लगता कि यह मुनाफे का धंधा नहीं है। इससे हानेने वाली कमाई जरूरतें पूरी करने के लिए काफी नहीं है। फसल बर्बाद होने की हालत में उन्हें कई बार लागत भी नहीं मिल पाता। छोटे और भूमिहीन किसानों में इसका संकट बहुत बढ़ रहा है। जितनी मेहनत, निवेश और अनिश्चितताएं खोती में हैं, उसको देखते हुए तो यह दूसरे पेशों की तुलना में धाटे का सौदा ही लगता है।

किसानों की आत्महत्या कोई ताजा मामला नहीं है। पिछले 20 वर्षों में करीब तीन लाख किसान आत्महत्या कर चुके हैं। हर साल औसतन 14 से 15 हजार किसान अपनी जान दे रहे हैं। बेमौसम बारिश के बाद गत 6 स्मताहों में उत्तरप्रदेश, हरियाणा, राजस्थान, पंजाब, मध्यप्रदेश और महाराष्ट्र के हजारों किसान आत्महत्या कर चुके हैं। यह घोर विडबना है, कि कृषि प्रधान भारत में आर्थिक समस्याओं से घिरा एक अननदाता किसान हर 45 मिनट में खुदकुशी कर रहा है। प्रतिदिन 32 किसान आत्महत्या कर रहे हैं। एनसीआरबी के मुताबिक 1995–2013 के बीच 296000 से ज्यादा किसान आत्महत्या कर चुके हैं। आज, सरकार और समाज के सामने यक्ष–प्रश्न है कि आखिर कब तक मजबूर होकर अननदाता किसान, सल्फास का जहर खाकर या फंदे से लटककर, आत्महत्या करता रहेगा? अमेरिका या यूरोप के किसी भी देश में एक भी किसान ने खुदकुशी की होती तो वहां अब तक भूचाल आ जाता।

किसान मर रहे हैं, उन्हें बचाने की दिशा में हमारे नीति–नियंताओं को सोचना चाहिए। इनमें से हर एक मौत दुखदायी और शासन को गहरी नींद से जगाने वाली है। लेकिन, हद तो यह है कि राज्य सरकारें अब भी सच्चाई से मुंह मोड़ने की कोशिश कर रही हैं। वे यह मानने को तैयार नहीं हैं कि इन घटनाओं का कारण कृषि क्षेत्र में लंबे समय से चली आ रही समस्याएं हैं। हर पार्टी अपना दामन पाक–साफ बताने की कोशिश में लगी है, लेकिन मौतों के सिलसिले को रोकने के लिए इसके मूल कारणों की तह में जाने का प्रयास कोई नहीं करना चाहता है। मुख्य कारण, खेती से लगातार कम होती आमदनी है। क्या हमारी सरकारें कुछ ऐसा कर सकती हैं कि किसान कभी आत्महत्या ही न करें ?

इस देश का दुर्भाग्य है कि किसानों से अनाज जरूर सबको प्राथमिकता से चाहिए, पर किसान कभी किसी सरकार की प्राथमिकता में रहे नहीं। कृषि अब भी देश में रोजगार का सबसे बड़ा जरिया है। देश में खाद्य सुरक्षा के लिए इसका विकास जरूरी है परन्तु, आजादी के बाद सारी विकास की योजनाएं शहरों के केन्द्र में रखकर तैयार की गई। किसान तथा कृषि प्रधान देश का नारा संसद तक ही सीमित रहा। आज भी सरकार का सारा फोकस शहरी विकास पर केंद्रित है। खेती किसी भी मुल्क के जिंदा रहने की बुनियाद होती है। जब बुनियाद ही नहीं रहेगी तो ढ़ांचा बिखर जायेगा। हम चाहे जितनी तरक्की कर लें, लेकिन किसानों की तरक्की के बगैर सही मायने में देश खुशहाल नहीं होगा। इन किसानों में खेतिहर मजदूर भी हैं जो भूमिहीन हैं। उसके पसीने से नहाकर ही धरती सोना उपजती है। कृषि में लगे परिवार बर्बाद हो गए, गांव के गांव निराशा में डूब गए। इतना होने पर भी राजनीतिक सत्ता कारगार कदम उठाने को तैयार नहीं हैं। देश के गांवों में मौत का तांडव चल रहा है, किन्तु सरकारों को जैसे इससे कोई मतलब ही नहीं है। केन्द्रीय सरकार यह कह कर पल्ला झाड़ लेती है कि 'कृषि' राज्यों का 'विषय' है। यदि किसानों की आत्महत्या के सैलाब को रोकना है, यदि देश का विकास करना है तो विकास की दिशा को बदलना होगा और देश के विकास की धुरी गांवों पर केन्द्रित करनी होगी और गाँव को विकास की मूल इकाई मानना होगा।

दहकता दहेज दावानल

HkkjpUn tSu] ckMesj

कन्या का जन्म होते ही उसके माता–पिता को उसके भविष्य में विवाह और विवाह पर दहेज देने की चिन्ता सदैव सताती रहती है। क्योंकि भारत की पारिवारिक संस्कृति में करीब सभी जातियों में दहेज देने की प्रथा सदियों से चली आ रही है। किसी जाति में कन्या को दहेज शादी के अवसर पर, तो किसी जाती में शादी के बाद देने का प्रचलन रहा है। कन्या के माता पिता अपनी क्षमतानुसार दहेज देते हैं तो कई लड़के वाले अपने लडके की शादी पर मनमाना दहेज मांगते हैं। कुछ लड़के वाले लोग तो इतना दहेज दोगे तो ही अपने लड़के की शादी करने की हामी भरते है। कई लड़की वाले परिवारों में लड़की का पढ़ा लिखा नहीं होना, सौन्दर्यता का अभाव, शरीर में अंपगता, मोटापा आदि अन्य प्रकार की कमियों–खामियों के कारण अपनी कन्या के हाथ पीले करने की अपनी मजबूरी होती है तब ऐसी परिस्थिति में लड़के वालों की मांग पर या अधिक दहेज देकर लड़के वालों को रजामंद करते हुए लड़की वाले अपनी कन्या का विवाह रचाते हैं। शादी पर स्वच्छता से लड़की वालों की तरफ से कन्यादान के साथ जो कुछ दिया जाता है और उस पर लड़के वालों की तरफ से किसी प्रकार की टीका टिप्पणी नहीं होती है तो यह दहेज नहीं कन्यादान के मतदान की श्रृंखला में आता है जो भारतीय पारिवारिक संस्कृति में सुखद पहलू समझा जाता है।

शादी पर दहेज की प्राचीन परम्परा ने वर्तमान समय में आर्थिक विषमता का रूप धारण कर लिया है। अब तो दहेज देने से पहले शादी पर अन्धाधुन खर्च ने तो लड़की वालों के सामने गम्भीर समस्या उत्पन्न कर दी है। लड़की की शादी में बारात का स्वागत सत्कार शाही बनता जा रहा है। वहां शादी के प्रीतिभोज पर फिजूलखर्ची इतनी बढ़ गई है कि बनने वाले भोजन में व्यजनों की संख्या अपरम्पार होती तो ऐसी स्थिति में कई व्यजनों को चखने तक की नौबत नहीं आती है। शादी के ऐसे खर्चों में लड़की वालों की कमर टूट जाती है। इसके बाद लड़की को विदाई में दहेज की प्रतिस्पर्धा ने लड़की वालों के सामने गम्भीर समस्या खड़ी कर रखी है। किसी जमाने में दहेज सैकडों रूपयों की लागत का होता था जो धीरे–धीरे बढ़ता हुआ हजारों, लाखों की सीमा को लांघ कर अब करोड़ों रूपयों की कीमत में तबदिल हो गया है। जिससे समाज का अर्थाभाव से पीड़ित वर्ग तो देने से दूर रहा, सामान्य वर्ग भी इतनी बड़ी धनराशि का दहेज देने में सक्षम नहीं हो पाता है। फिर भी सामाजिक वाहवाही, आपसी प्रतिस्पर्धा ने उसे अर्थबोझ को सहन करने के लिए सब कुछ दाव पर लगाना पड़ता है चाहे वह कर्जदार क्यों न हो जाये।

दहेज के रूप में विभिन्न जातियों में उनकी परम्परानुसार कई प्रकार की सामग्री दी जाती है लेकिन दहेज में सोना, चांदी, कीमती आभूषण, मंहगे वस्त्र, उच्च कोटि के भौतिक साधनों में आलिशान कार के साथ रहने के लिए बंगला, नकद धनराशि आदि देने के प्रचलन ने लड़की वालों को झकझोर रखा है। इतना ही नहीं शादी से पूर्व लड़के वाले लड़की वालों से अपने लड़के की पढ़ाई पर हुये खर्च या शादी के बाद पढ़ने पर होने वाले खर्च की मांग भी दहेज के रूप में करते हुए शर्माते नही है। ऐसी विकट स्थिति में लड़की वालों को लड़की की मजबूरी में शादी करनी पड़ती है। मांग की पूर्ति आर्थिक कठिनाईयों, समस्याओं के बावजूद भी करनी पड़ती है।

शादी में लड़के वालों की मांग पर दहेज की बात तो समझ आती है वहां समाज के कुछ आर्थिक दृष्टि से सम्पन्न लड़की वाले परिवारों ने तो दहेज को अधिक जटिल बना दिया है और ऐसे परिवार के लोग अपनी लड़की को सीमा से बाहर अब तक अन्य लोगों के दिए दहेज से अधिक देने की होड़ लगा दी है। इस कारण लड़की वाले भी दहेज की खर्चीली कुप्रथा में भागीदार रहते हैं। वहां पढ़ी लिखी लड़कियों, फैशन में बावली कन्याऐं, धनकी लालची – बेटियां भी अपने पीहर पक्ष से अधिक लेने की चाह में दहेज को खर्चीला व जटिल बना रही हैं। अपनी क्षमता से अधिक लड़के वालों की मांग पर दहेज देने के बाद भी लड़की वालों को आर्थिक मार से झूझना पड़ता है। क्योंकि कई लड़के वालों की अपने लड़के की शादी पर मिले दहेज से संतोष नहीं होता है तो वे लड़की से अपने पीहर से कुछ न कुछ लाने की मांग करते रहते हैं। यदि लड़की के परिवार द्वारा मांग पूरी करते हैं तो ठीक अन्यथा लड़की को वे विभिन्न प्रकार के कष्ट, यातनाऐं देकर उत्पीड़ित करते हुए मजबूर करते हैं कि वे अपने पीहर से कुछ लाए। ऐसी स्थिति में लाचार लड़की के माता पिता अपनी लाड़ली के सुख चैन हेतु कुछ देकर पीछा छुड़ाते हैं। कई लड़के वालों की मांग की तृष्णा पूर्ण नहीं होती और बार बार मांग की अपूर्ति नहीं होने पर वे अपनी बहु को या तो आत्मा हत्या करने पर मजबूर कर देते हैं या फिर उसकी अमानवीय तरीके से हत्या की जाती है।

दहेज के दावानल में जलने और मरने वाली लड़कियों के आये दिन समाचारों ने समाज को झकझोर कर रख दिया है लेकिन इसके बाद भी दहेज का लेना देना थम नहीं रहा है। इस कुरीति कुप्रथा को समाज के धनाड़्य वर्ग ने और अधिक जटिल और गम्भीर बना दिया है। जिसके कारण अर्थाभाव से पीड़ित एवं सामान्य वर्ग के परिवार की कन्याओं की शादियां होना मुश्किल होने लगा है। यह स्थिति उस समय और अधिक गम्भीर थी जब समाज में लड़कियों की संख्या लड़कों से अधिक थी। लेकिन पिछले दो दशकों से स्थिति में बदलाव आया है। अब लड़कों की अपेक्षा लड़कियों की संख्या कम होने पर लड़कों की शादी समस्या बन गई है। परन्तु इसके बाद भी लड़की को दिए जाने वाले दहेज की समस्या कम होने की बजाय आधुनिक भौतिक साधनों की बढ़ती मांग ने ओर अधिक गम्भीर मंहगा कर दिया है।

समाज में धनाड़्य वर्ग के लोगों में यदि आपसी सम्बन्ध बनते हैं और उनके लड़के लड़की की शादी होती है तब वे पुराने सभी प्रकार के दिये गये दहेज सीमा को लांघने की होड़ में रहते हैं। परिणाम स्वरूप सामाजिक पारिवारिक व्यवस्थाएं स्वतः ही लड़खड़ा जाती हैं। दहेज की प्रथा रिवाज–परम्परा अधिक जटिल नहीं बने, जिसमें समाज के प्रत्येक वर्ग को निर्भय हो ऐसे कठोर नियम बनाने चाहिये ताकि कोई परिवार दहकते दहेज दावानल में बचा रह सके। समाज को चाहिये कि जो परिवार दहेज नहीं लेता। उसे समाज रत्न से सम्मानित करने की पहल करनी चाहिये और समाज के प्रत्येक कार्य में उसका सर्वोपरि स्थान रहे। यदि ऐसा होता है या किया जाता है तो कई परिवार दहकते दहेज दावानल से बच कर सुखी जीवन जी सकेंगे।

'kfDr 'kkjhfjd {kerk l ugha mRiUu gksrh] og vt; ladYi mRiUu gksrh g &egkRek xka/kh

धर्म पर चलें

ujsnz vkgwtk foosd

आज के इस भौतिकतावादी युग में मनुष्य धार्मिक दिखाई देने के लिए मंदिरों, तीर्थ स्थानों, तथाकथित धर्म गुरुओं के डेरों पर जाने प्रवचन कीर्तन सुनने जैसे कार्य अधिकता में करने लगा है। वैसे भी कथावाचकों के प्रवचनों में हजारों लाखों की भीड़ देखकर एकबारगी ऐसा लगता है जैसे इस देश में सभी धर्म पर चलने वाले धार्मिक हो गए हैं और हमारा यह देश भारत विश्व का आध्यात्मिक सिरमौर होने का गौरव पुनः प्राप्त कर रहा है।

लेकिन जब हम अपने चारों और दृष्टि दौड़ाते हैं तो इस सबके बावजूद चोरी, डकैती, बलात्कार, हत्या, भ्रष्टाचार, गरीबी अनैतिकता समाज में बहुत अधिक बढ़ गई है। जब समाज में इतना ज्यादा अनाचार बढ़ रहा है तो फिर कथावाचकों के पंडालों में हजारों लाखों की भीड़ क्या दर्शाती है? प्रवचन सुनकर स्वयं को धन्य समझने वाले लोग क्या धर्म के मार्ग से परे नहीं चल रहे? आखिर धर्म का मार्ग क्या है जिस पर चलने का आदेश वेद भगवान ने धर्म प्र यज। ऋग्वेद 3/17/5 द्वारा दिया। वेद में स्पष्ट कहा कि हम सभी धर्म का आचरण करें।

अब प्रश्न उत्पन्न होता है कि आखिर धर्म क्या है जिस पर आचरण करने का आदेश वेद भगवान ने मानव मात्र को दिया। योगेश्वर कृष्ण विषाद में फंसकर पलायन की स्थिति में आ चुके अर्जुन को महाभारत युद्ध से पूर्व गीता का संदेश देकर कर्तव्य कर्म करने के लिए प्रेरित करते हुए कर्तव्य कर्म के पालन को ही धर्म बतलाते हैं। और निष्काम बिना कामना किए गए यज्ञीय अर्थात परोपकार के कार्यों को सर्वश्रेष्ठ कर्म की श्रेणी में रखते हैं। वैशेषिक दर्शन के अनुसार भी जिन नियमों का पालन करने से लौकिक एवं परालौकिक उन्नति हो, उन्हीं का नाम धर्म है और निश्चित रूप से परोपकार के यज्ञीय कार्य सर्वश्रेष्ठ कर्म की श्रेणी में आते हैं और न्यायकर्ता प्रभु अपनी न्यायव्यवस्था के अधीन ऐसे परोपकार के कार्यों के लिए मनुष्य को अच्छी नियति, भाग्य व प्रारब्ध प्रदान करते हैं। इससे यह सिद्ध हुआ कि यज्ञीय परोपकार के कार्य करने से मनुष्य की लौकिक एवं परालौकिक प्रगति होती है। अतः परोपकार के कार्य करना हम सभी का धर्म है।

धर्म का एक अर्थ धारण करने वाला भी होता है। दार्शनिकों के अनुसार जिस गुण विशेष से उस पदार्थ की सत्ता का ज्ञान हो वही उसका धर्म होता है। उदाहरण के लिए अग्नि की सत्ता का बोध उसके गुण उष्णता जलाने की शक्ति से होता है अर्थात अग्नि का धर्म है उष्णता। अब यदि अग्नि अपने धर्म उष्णता को छोड़ दे अर्थात ठंडी पड़ जाए तो वह अपना स्वरूप खोकर राख में परिवर्तित हो जायेगी। मनुस्मृति में भी कहा गया है–

/keZ ,o grks gfUr /keksZ j{kfr jf{kr% A

अर्थात जो धर्म को मार देते हैं, धर्माचरण छोड़ देते हैं, धर्म उन्हें नष्ट कर देता है और जो धर्म की रक्षा करते हैं धर्म उनकी रक्षा करता है। वैसे भी जिस गुण से पदार्थ की सत्ता का बोध हो वही उसका धर्म होता है अब यदि उस पदार्थ ने उसी गुण विशेष का त्याग कर दिया तो उसकी सत्ता व स्वरूप स्वतः नष्ट हो गई।

मनुष्य का धर्म है मनुष्यता और यदि मनुष्य अपने इसी मनुष्यता के गुण का त्याग कर दे तो वह इस पृथ्वी पर मनुष्य के रूप में पशुओं के समान हो जायेगा। अर्थात जब मनुष्य ने अपने धर्म मनुष्यता को मार दिया तो धर्म ने उसे मार दिया। वह मनुष्यरूपेण मृगाश्चरंति मनुष्य के रूप में पशु समान हो गया।

अब प्रश्न उत्पन्न होता है कि मनुष्य का धर्म मनुष्यता है क्या इसके लिए कांतदर्शी देव दयानंद ने आर्योद्देश्यरत्नमालाः में मनुष्य को परिभाषित करते हुए लिखा "मननशील विचारवान सभी से स्वात्मवत् यथायोग्य व्यवहार करके निर्बल धर्मात्माओं को संरक्षण दुष्टों को दंड देता हुआ सत्याचरण करता हुआ परोपकार के कार्य किया करे।" अब हम स्वयं विचार कर लें कि हम सभी मनुष्य के रूप में अपने धर्म मनुष्यता का कितना पालन कर रहे हैं। तथाकथित धर्मगुरुओं कथावाचकों मंदिरों आदि में निरंतर बढ़ती भीड़ बढ़ती धार्मिकता या धर्म आचरण का प्रतीक नहीं है।

लघु कथा

जीवन की गति

एक गांव में दर्जी रहता था। उसकी मशीन की सूई टूट गई। बाजार दूर था और सप्ताह में एक बार ही लगता था। दो दिन काम न कर पाने के कारण वह बाजार हॉट से दो सूइयां ले आया। एक सूई को सुरक्षित रख कर उसने दूसरी से काम शुरू कर दिया। लेकिन इस बार उसकी वह सूई खूब चली। कुछ दिनों बाद उसे दूसरी सूई का ध्यान आया। उसने अपने थैले से निकाल कर जब वह पैकेट खोला तो उसने देखा कि दूसरी सुई में पूरी तरह जंग लग चुका है। परुतं जो सूई वह काम में ला रहा था, वह अभी भी नई चमकदार थी। मनुष्य जीवन की भी यही गति है। इसी प्रकार बिना हाथ पैर चलाये शरीर भी जंग खा जाता है।

fu/kurk çdV djuk fu/ku gkuk ls vf/kd n[knk;h gksrk gS&çepUn

स्वामीनाथन की रिपोर्ट

&vukfedk

¼vUunkrk fdlku dMh egur }kjk ge lHkh dk fy;s vukt] nkysa] lfCt;ka vkfn dk mRiknu djrk gS ysfdu mls viuh mit dk mfpr eY; iklr ugha gksrkA fcpkfy;s o 0;kikjh oxZ mldk “kks’k.k djrs gSA dtZ esa Mwck fdlku vkRegR;k djus ij etcwj gksrk gSA vkRegR;kvksa dh c<rh la[;k us ljdkj dk /;ku [khapk ftldk urhtk Fkk& ljdkj }kjk xfBr LokehukFku vk;ksx ftlus viuh fjiksVZ o"kZ 2006 esa lkSai nh FkhA ysfdu mls vkt rd ykxw ugha fd;k x;kA iLrqr gS mlh fjiksVZ ds ieq[k va'k½

सभी को भरपेट व गुणवत्ता वाला भोजन मिले, यह देश के लिए 21वीं सदी की मुख्य चुनौती है। इस चुनौती को पूरा करने में अन्नदाता किसान का अहम योगदान है। लेकिन वही किसान कर्ज की चपेट से निकलने को छटपटा रहा हो, उसकी हालत दयनीय हो और आत्महत्या तक की नौबत आ जाए तो चिंताजनक बात है। मुख्यतः अन्न की आपूर्ति यकीनी बनाने और किसान की आर्थिक हालत को बेहतर करने के दो मकसदों को लेकर सन 2004 में केंद्र सरकार ने डाक्टर एम.एस. स्वामीनाथन की अध्यक्षता में ^u'kuy deh'ku vkWu QkeZlZ* का गठन किया। इसे आम लोग स्वामीनाथन आयोग कहते हैं। इस आयोग ने अपनी पांच रिपोर्ट सौंपी। अंतिम व पांचवी रिपोर्ट 4 अक्टूबर, 2006 में सौंपी गई। रिपोर्ट ^rst o T;knk lekos'kh d`f"k fodkl* के 11वीं पंचवर्षीय योजना के लक्ष्य को लेकर बनी है।

D;k cuk;k x;k vk;ksx

सबको अच्छा भोजन उपलब्ध हो, खेती की उत्पादकता बढ़ाई जाये, खेती से किसान को पर्याप्त लाभ हो, खेती की सस्टेनेबल तकनीक विधियां अपनाई जाएं, किसानों को आसान व पर्याप्त ऋण मिले, सूखे, तटवर्ती एवं पहाड़ी क्षेत्रों में कृषि की विशेष प्रोत्साहन योजनाएं लागू हों, कृषि लागत घटे और उत्पादन की क्वालिटी बढ़े, कृषि पदार्थों के आयात की दशा में किसान को सरकारी संरक्षण मिले तथा पर्यावरण संरक्षण के मकसद को पंचायतों के माध्यम से हासिल किया जाए– उक्त सभी उद्देश्यों के साथ इस आयोग का गठन किया गया था। नालेज व स्किल बढ़ाना, टेक्नोलोजी का खेती में ज्यादा इस्तेमाल व मार्केटिंग सुविधाएं बढ़ाना भी आयोग की प्राथमिकताओं में शुमार था। खेती के लिये पानी की कमी दूर करने संबंधी योजनाओं को बढ़ावा देना भी उक्त कमीशन की मंशा थी।

vk;ksx esa dkSu 'kkfey Fkk

चेयरमैनः एमएस स्वामीनाथन, पूर्णकालिक सदस्यः रामबदन सिंह, वाईसी नंदा, पार्ट टाइम मेंबरः आरएल पिटाले, जगदीश प्रधान, अतुल कुमार अंजान। सदस्य सचिवः अतुल सिन्हा, आयोग के अध्यक्ष अंतर्राष्ट्रीय स्तर के कृषि वैज्ञानिक डाक्टर एमएस स्वामीनाथन को भारत की हरित क्रांति का जनक माना जाता है जिसके जरिये बढ़ती जनसंख्या को पर्याप्त अन्न मुहैया करवाना संभव हुआ। उनका लक्ष्य पूरी दुनिया को भूख से निजात दिलाने के साथ ही खेती को पर्यावरण मित्र बनाना भी था।

dkSu&dkSu lh flQkfj'ksa gSa fjiksVZ esa

भूमि सुधारों की गति को बढ़ाने पर आयोग की रपट में खास जोर है। सरप्लस व बेकार जमीन को भूमिहीनों में बांटना, आदिवासी क्षेत्रों में पशु चराने के हक यकीनी बनाना व राष्ट्रीय भूमि उपयोग सलाह सेवा सुधारों के विशेष अंग हैं। सिंचाई के लिए सभी को पानी की सही मात्रा मिले, इसके लिए रेन वाटर हार्वेस्टिंग व वाटर शेड परियोजनाओं को बढ़ावा देने की बात रिपोर्ट में वर्णित है। इस लक्ष्य से पंचवर्षीय योजनाओं में ज्यादा धन आबंटन की सिफारिश की गई है। भूमि की उत्पादकता बढ़ाने के साथ ही खेती के लिए ढांचागत विकास संबंधी भी रिपोर्ट में चर्चा है। मिट्टी की जांच व संरक्षण भी एजेंडे में है। रिपोर्ट में बैंकिंग व आसान वित्तीय सुविधाओं को आम किसान तक पहुंचाने पर विशेष ध्यान दिया गया है। क्रॉप लोन सस्ती दरों पर, कर्ज उगाही में नरमी, किसान क्रेडिट कार्ड व फसल बीमा भी सभी किसानों तक पहुंचाने की बात है। मिलेनियम डेवलपमेंट गोल (यानी 2015 तक भूखों की तादाद आधी रह जाए) पूरे हों व प्रति व्यक्ति भोजन उपलब्धता बढ़े, इस मकसद से सार्वजनिक वितरण प्रणाली में आमूल सुधारों पर बल दिया गया है। कम्युनिटी फूड व वाटर बैंक बनाने व राष्ट्रीय भोजन गारंटी कानूनी की संस्तुति भी रिपोर्ट में है। किसान आत्महत्या की समस्या के समाधान, राज्य स्तरीय किसान कमीशन बनाने, सेहत सुविधाएं बढ़ाने व वित्त–बीमा की स्थिति पुख्ता बनाने पर भी आयोग ने विशेष जोर दिया। इन्हीं के साथ–साथ मार्केटिंग सुधार भी अहम स्थान रखते हैं। किसानों की फसल के न्यूनतम समर्थन मूल्य कुछेक नकदी फसलों तक सीमित न रहें, इस लक्ष्य से ग्रामीण ज्ञान केंद्र व मार्केट दखल स्कीम भी लांच करने की सिफारिश रिपोर्ट में है। एमएसपी औसत लागत से 50 फीसदी ज्यादा रखने की सिफारिश भी की गई है ताकि छोटे किसान भी मुकाबले में आएं, यही ध्येय खास है।

फीकी पड़ गयी दूधों नहाओ पूतों फलो की चमक

&cy thr flag vk;Z] dqyifr dU;k xq#dqy] Mkch ¼fglkj½

शहरी संस्कृति की चपेट में आने से हरियाणा के गांव अपना पुराना स्वरूप खो चुके हैं। अब वे न तो गांव ही रहे और ना ही शहर बन पाये हैं। बाजार के बेरहम हमले ने गांवों से उसका सादा चरित्र और दूध से धुली उसकी बेदाग आत्मा छीन ली है। अब गांवों से उसका भोलापन, आत्मनिर्भरता और अपनापन काफी कोसों दूर जा चुके हैं पहले वाले अब न गांव रहे, न घर। न जंगल रहे और ना ही खेत। अब न गांव की चौपाल में लोग बैठते हैं और ना ही वहां पर न्याय–नीति की बातें चलती हैं। ग्रामीण समाज अपनी–अपनी ढफली और अपना–अपना राग हो चुका है। अपने–अपने पैंतरे हैं, अपने–अपने दांव चल रहे हैं। हर जगह ठगबाजी, घाघबाजी है। हर अवसर पर एक से बढ़कर एक जालसाल है। वैज्ञानिक प्रगति तथा पाश्चात्य धरोहर तेजी से लुप्त होती जा रही है।

वर्तमान सामाजिक वातावरण एवं चकाचौंध ने मानों इंसान को पागल बना दिया है। दरवाजा बंद कर टेलीविजन, वीडियो देखने की प्रवृत्ति ने गांवों में जहां आत्म–केंद्रित संस्कृति का बीजारोपण किया, वहीं आपसी मेलजोल को भी कम कर दिया है। शारीरिक और मानसिक विकास के प्रति बेपरवाह रूख को बढ़ावा दिये जाने से गांवों में प्रचलित खेल और मेले लुप्त होते जा रहे हैं। आज गांवों में भरने वाले लोक मेलों में पहले वाला आकर्षण नहीं रहा है। अब वे बदमाशी व लूट के अड्डे बनते जा रहे हैं। केबल युग के मौजूदा दौर ने गांवों के तमाम परंपरागत तीज–त्योहारों की गरिमा को भी ठेस पहुंचाई है। इसने गांवों के लोक संगीत, नाट्य व गायन को भी निगल लिया है। आज किस्से, कहानियां, भजन व सांग की परंपरा गांवों से लुप्त हो गई है।

आज गांवों में पनघट की चहल–पहल, बैलगाड़ियों एवं रथों की रेलमपेल, पगड़ी की इज्जत और अलावों की रौनक बहुत फीकी पड़ गई है। गांवों से घरेलू चाकी गई, चूल्हा फूट गया और बूढ़े बाबा का हुक्का टूट गया। कोल्हू, हल, चड़स, रहट, कजावा, लाव, टाट और चाक एक–एक करके चले गये हैं। गांव के जीवन में अलाव की उपयोगिता अद्वितीय रही है। गांवों में आज बच्चों की भीड़ टीवी के आसपास या कॉमिक्स पढ़ने में जुटती है।

युवा, किशोर सीधे सिनेमाघरों या उपन्यासों में मन रमाते हैं। बूढ़े बाबा की बैठक गर्मी–सर्दी की रातों में सूनी रहने लगी है। दादा–नाना की कल्पना–शक्ति कुंठित हो चली है। अब तकही सुनने की गरज से बाबा के हुक्के की भरी जाने वाली चिलम आज ठंडी पड़ गई है।

हमारे गांव की चौपाल तथा पनघट आपसी मेलजोल, सद्भाव और सहकारिता के केंद्र हुआ करते थे। अब गांवों से चौपाल एवं पनघट के सांस्कृति नजारे खत्म हो गये हैं। एक समय था जब गांवों के लोग बेहद परिश्रमी और संतोषी होते थे। पौ फटने से पहले ही पुरुष अपने खेतों में पहुंच जाते थे, वहीं महिलाएं चाकी, चूल्हे तथा पशुओं के गोबर–बुहारी, न्यार आदि में रम जाती थीं। आज की युवा पीढ़ी उसे हाथ लगाने में अपना अपमान समझने लगी है। अतः ग्रामीण लोग बिजली से चालित आटा चक्कियों पर निर्भर हो गये हैं। अगर दो–चार दिन बिजली महारानी न आये तो उन्हें आटा उधार लेने के लिए पड़ोसियों के पास भटकना पड़ता है। कृषि के यंत्रीकरण के आज खेतों की जोत ट्रैक्टरों से की जाने लगी है। अतः बैलों के हल कबाड़ का स्थान लेते चले गये और किसान के खूंटे से पशुधन खुलता चला गया।

जहां पहले हर ग्रामीण परिवार में पांच–सात पशु होते थे, आज स्थिति इसके उलट हो गई है। अब पांच–सात परिवारों को मिलाकर एक दो पशु हैं। अब गांवों से पशु–प्रेम खत्म होता जा रहा है क्योंकि उनके रखने से हमारा अंग्रेजी पहनावा गंदा होने लगा है। जो ग्रामीण हाथ पशुओं पर प्यार से खरहरा करने के लिए सुबह और शाम उठते थे, वे अब घर में रखे टीवी तथा अन्य दिखावटी चीजों की झाड़–पोंछ में लगे हैं। ऐसे में पशुधन कब तक टिका रह पाता। परिणामस्वरूप गांवों से गोबर की खाद भी गायब होने लगी है। गोबर की कमी के कारण अब खेतों में रासायनिक खादों का इस्तेमाल शुरू हो गया है। गांव रासायनिक खादों का प्रयोग कर अपनी आत्म–निर्भरता खोते जा रहे हैं।

रासायनिक खादों की तरह आधुनिक बोतलबंद शीतल पेयों ने भी ग्रामीण लोगों को अपनी ओर आकर्षित किया है। इन पेयों की मांग अब गांवों में भी बढ़ती जा रही है। इसी कारण आज गांवों में परंपरागत लोग पेयों को हेय की दृष्टि से देखा जाने लगा है। गांवों में दूध–दही, छाछ–राबड़ी, धाणी–भूंगड़ा, बाकली–सतू, खिचड़ी आदि लोकपेय एवं पदार्थों का चलन पुराने समय से चलता आया है, जो हमारे स्वास्थ्य के लिए बड़े गुणकारी माने गये हैं। उन दिनों दूध बेचना पाप समझा जाता था।

गांवों में दूध को पूत जितना पवित्र समझा जाता था। दूध–पूत की सौगंध मात्र से ही रूह कांप जाती थी। लेकिन आज दूधों नहाओ, पूतों फलो की चमक गांवों में फीकी पड़ चुकी है। गांव से दूध ड्रमों में डालकर शहरों को जा रहा है। गांवों में जहां मुंह अंधेरे दूध बिलौने की सुरम्य स्वर लहरी वातावरण में गूंज उठती थी। उसकी जगह आज दूधियों के वाहनों की खड़–खड़ ले चुकी है।

देहात में दूध–दही का खाना नहीं रहा तो धीरे–धीरे वह जगह मयखाना ले मरा। खुराक बदली तो खून भी बदल गया। अब झगड़े–फसाद, थाना–कचहरी में गांव उलझता चला गया है। अब तो अक्सर शराबियों द्वारा किये गये हुल्लड़ पर इकट्ठे हुए जमघट गांवों में नजर आते हैं। आधुनिकता का यह कैसा अनचाहा भूत है, जो हमारे गांवों में सिर पर आ चढ़ा है।

lPph cMkbZ mlh dh gS ftldh 'k=q Hkh ljkguk djs &jghe

माँ जैसा कोई नहीं - जीवन की शांति-स्तंभ है माँ

& Mk ekfudk oekZ

¼ek] ,lk lcls/ku gS tks cgqn lqdqu dk vglkl djkrk gSA ek¡ gh gS] ftldk vkpy rirh /kwi esa 'khryrk nsrk gS] og thou dh v/kjk esa jks'kuh dh fdj.k fn[kkrh gSA thou dh dfBu ls dfBu nkSj esa Hkh og viuh cPpksa dk lkFk ugha NksM+rhA cPps Hkh gj ekSM+ ij viuh ek¡ dks lgkjk nsus okys 'kfDr LrEHk ds :i esa ikrs gSA og cM+s&cM+s ladVksa ls] foifÙk;ksa ls mckjrh gSA ek¡ ls tqM+h ,slh gh vuekssy&vuqie vuqHkwfr;ka i<s bl ys[k esaA½

इस बात में कोई संदेह नहीं है कि मां, हर रूप में बच्चों के लिए शक्ति स्तंभ होती है। एक अनकहा सा सहारा, जो उन्हें हर परिस्थिति में थामे रहता है। तभी तो मां मात्रा एक शब्द नहीं, एक अनुभति है, जो परिभाषाओं से परे है। एक ऐसा रिश्ता, जो अहसासों की बुनियाद पर खड़ा है। अहसास, जिनकी नींव पर निर्मित होता है, हर परिवार के बच्चों का, देश के भावी नागरिकों का भविष्य। इसलिए कहा भी गया है कि संसार की हर मां बिन कहे एक बच्चे का मन पढ़ने की क्षमता रखती है। तभी तो जीवन का आधार बन अपने बच्चे को जानते–समझते हुए मां उसका व्यक्तव्य तराशती है उसे इंसानियत का पाठ पढ़ाती है। वो मां ही तो है, जो मनुष्यता घढ़ती है और अपनी हर भूमिका में खुद को साबित करने का माद्दा रखती है।

सीख देती है मां

बच्चों के जीवन की पहली पाठशाला होता है परिवार। इस पाठशाला में उनकी पहली शिक्षिका मां ही होती है, जो जीवन के रास्तों पर संभलकर चलने की हिदायतें देती है। मां अपने बच्चों को जो भी सिखाती है, उसमें सबसे खास होता है मानवीय पीड़ा को समझने का भाव। मां, स्वयं औरों को सुख देकर सुख पाती है तभी तो अपने बच्चों को भी अपने से जुड़े लोगों का दर्द समझने की सीख देती है। मां से मिलने वाली शिक्षा ऐसी होती है कि उसका कोई दूसरा पर्याय नहीं हो सकता। सदाचार के मानवीय संस्कार बच्चा मां से ही पाता है। वो मां ही है, जो बच्चों के अनगिनत प्रश्नों के उत्तर देते नहीं थकती। उनकी सबसे बड़ी प्रशंसक बन हर छोटी बड़ी उपलब्धि को सराहती है। ज्ञान का स्रोत बन उनकी उलझने सुलझाती है। मां ही तो है जो बच्चों को महापुरूषों के विचारों से अवगत करा कर एक वैचारिक दृष्टि देती है।

परिष्कृत करती है व्यवहार

एक मां अपने बच्चों की कमियों को जितना अनदेखा करती है, उतनी ही सूक्ष्मता से उनका विश्लेषण भी। मां संसार की श्रेष्ठ आलोचक होती है। मातृत्व का भाव ही ऐसा है कि जो बच्चों के व्यक्तित्व को गहराई से जानता–पहचानता है। मां, अपने बच्चों के व्यवहार से लेकर उनके संस्कार तक हर पहलू को गहराई से समझती है। तभी तो अपने जीवन के लिए तैयार करती है। उनकी कमजोरियों को दुनिया से भले ही छुपाती है पर स्वयं उन्हें हकीकत से रूबरू करवाना नहीं भूलती। मां के रूप में एक स्त्री के व्यक्तित्व की सबसे बड़ी विशेषता यही है कि आदर्शों की बातें मात्रा उपदेश बनकर नहीं रह जाती। एक मां व्यवहारिक धरातल पर भी बच्चों को निखारने–संवारने में अपना जीवन लगा देती है। मां ही तो होती है, जिसका मन कमियां ढूढ़ने के लिए नहीं बल्कि बच्चों का बेहतर मार्गदर्शन करने के लिए उनकी आलोचना करता है। अपने बच्चों को सुधार के रास्ते सुझाता है।

हर समय साथ

मां का क्षमाशील रूप बच्चों को, अच्छा हो या बुरा, किसी भी वक्त में अकेले नहीं होने देता। हर गलती को माफ कर मां अपने बच्चे के राह भटकने पर भी उनसे दूरी बनाने के बजाय उनका मार्गदर्शन कर उन्हें सही समझ देती है। मां बिन कहे बच्चों का मन पढ़ना जानती है। कहा भी जाता है कि एक बच्चा मां से छूप सकता है पर कुछ छुपा नहीं सकता। मां का स्वभाव ही ऐसा होता है, जो बिन कहे बच्चों के सुख–दुख जान–समझ लेती है। इसलिए मां का साथ हर बच्चे के लिए कड़ी धूप मं शीतल छाया समान है। एक मां ही तो होती है, जो कभी नाराज नहीं होती। मां अपने बच्चों की बड़ी से बड़ी गलती माफ कर देती है। वो हर हाल में उनके लिए दुआ ही मांगती है। हमेशा अपने बच्चों की सुख–समृद्धि की कामना करती है। मां का यह रूप देवतुल्य होता है। तभी तो संसार का कोई रिश्ता ऐसा नहीं, जहां बच्चे खुलकर अपनी गलती स्वीकार कर पाते हैं। अपने मन की कह पाते हैं। बिना किसी भय के। क्योंकि हर बच्चा यह जानता है कि मां के संवेदनशील ह्रदय के द्वार उसके लिए हर परिस्थिति में खुले हैं। तभी तो जो मन में है, कह जाता है बच्चा। मां से बतियाते समय मन में कोई बाध्यता कोई असहजता नहीं होती। मन के भाव निर्बाध, बह चलते हैं। भावना के धरातल पर ऐसा जुड़ाव, ऐसी सुरक्षा का भाव मां के आंचल में ही मिल पाता है।

जीवन का संबल

जीवन भर अपने बच्चों को पालने और संभालने की जद्दोजहद में मां स्वयं को दोयम दर्जे पर ही रखती है। अपने उत्तरदायित्व पूरे मनोयोग से निभाती है। यही वजह है कि जिदंगी के किसी भी मोड़ पर बच्चे अपनी मां को सहारा देने वाले शक्ति सतंभ के रूप में खड़ा पाते हैं। मां आशारहित और धुधलाएं जीवन में भी रोशनी की किरण दिखाती है। उनसे हम संबल पाते हैं। इसकी वजह शायद यह है कि मांएं अपने बच्चों के सुख–दुख की साक्षी होती हैं। उसकी हर भावना, हर संवेदना बच्चों से ही जुड़ी होती है।

किसान क्रांति के जनक : लौह-पुरु ा चौधरी चरणसिंह को महाकवि सूरदास ने भारत का प्रधानमंत्री बनाया

Mk- nxiky flag lkyadh

किसान–क्रांति के जनक एवं भारत के पूर्व प्रधानमंत्री स्वर्गीय चौधरी चरण सिंह उन महापुरुषों में हैं जिन्होंने आधुनिक भारत के निर्माण में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। वे हिंदुस्तान के प्रमुख तपे–तपाये लोकप्रिय राजनेता थे। देश के स्वाधीनता–संग्राम में उनका उल्लेखनीय योगदान रहा है। वे अर्थशास्त्र के महान विचारक व मौलिक चिंतक थे। ग्राम्य, कृषि तथा सहकारिता के क्षेत्र में उन्होंने तत्कालीन शक्तिशाली प्रधानमंत्री श्री जवाहरलाल नेहरू की अदूरदर्शी नीतियों का स्पष्ट विरोध किया। देश के सर्वोच्च पद पर आसीन होकर राष्ट्र–निर्माण के लिए अथक रचनात्मक प्रयत्न किए। चाहे सत्ता में हों या विरोधी दल में, देश का किसान–कामगार चौधरी चरण सिंह का नाम सुनकर उनकी सभाओं में खिंचा चला आता था। निहित स्वार्थों को चौधरी चरण सिंह एक सही चेतावनी थे। उनके विचारों में अपूर्व दृढ़ता थी और जो कहते थे, उसको व्यवहार में करके दिखाते थे।

महाकवि सूरदास जी ने एक भजन के जरिए ऐसी भविष्यवाणी कर डाली थी जो हूबहू चौधरी साहब के राज्याभिषेक से मेल खाती है :

''अरे मन धीरज काय न धरै।
एक सहस नव सत के ऊपर एसौ जोग जुरै।
शुक्ला जया नाम संवत्सर छठ सोमवार परै।
हलधर पुत्र पमार घर उपजै दिल्ली छत्र धरै।।''

अर्थात् ''रे मन धैर्य क्यों नहीं रखता। संवत् 1990 के आगे शुक्ल और जया संवत्सर के बीच जब छठी तिथि को सोमवार पड़ेगा, उस दिन पमार वंश किसान–पुत्र दिल्लीश्वर होगा।''

चौधरी चरण सिंह देश के किसान–कामगारों के मसीहा थे। वे पिछड़े–दलित–शोषित–अल्पसंख्यक तथा सर्वहारा के रहनुमा थे। उनमें देशभक्ति एवं लोक–कल्याण की भावना कूट–कूट कर भरी हुई थी। वे भारत माता के ऐसे महान् सपूत थे जिन्होंने राष्ट्र–हित में बड़े से बड़ा त्याग करने में जरा भी विलंब नहीं किया। इस्तीफा तो हर समय उनकी जेब में लिखा रखा रहता था। विशुद्ध गांधीवादी, आदर्श प्रिय, यथार्थवादी तथा प्रखर व्यक्तित्व के धनी चौधरी चरण सिंह ने महात्मा गांधी की नीतियों एवं कई कार्यक्रमों को मूर्तरूप देने का प्रयास किया। वे बहुमुखी प्रतिभा संपन्न ऐसे जीवंत क्रांतिदर्शी राजनीतिज्ञ थे जो अपनी दूरदर्शिता, दृढ़निश्चयता और ईमानदारी के लिए देश के इतिहास में सदैव स्मरण किए जाते रहेंगे। सत्य–भाषण और स्पष्टवादिता उनके चरित्र का बल है, जिसके कारण उन्हें लौह–पुरुष कहना सर्वथा उचित है। उनसे मतभेद रखने वाला व्यक्ति भी यह स्वीकार करता है कि वह एक निडर और ईमानदार लोक नेता थे। भ्रष्टाचार को प्रशासन और जीवन के प्रत्येक क्षेत्र से खत्म करना उनके जीवन का लक्ष्य था। सादा–जीवन, उच्च–विचार, उज्ज्वल–चरित्र और देश–प्यार उनके चरित्र की विशेषतायें थीं। सामाजिक शोषण और उत्पीड़न के वे कट्टर विरोधी थे। उनकी आर्थिक नीतियों और मान्यताओं का मूल किसानों, कमजोर–वर्गों पिछड़े और अनुसूचित जातियों का कल्याण व उनकी आर्थिक दशाओं को ऊंचा उठाना था जिससे भारत समूचे तौर पर राष्ट्र–प्रगति की दिशा प्राप्त कर सके। अतः वह कृषि–मूलक आर्थिक नीतियों के समर्थक थे किंतु औद्योगिक एवं सर्वतोमुखी विकास में भी उनका उतना ही विश्वास था।

हिंदुस्तान की राजनीति में जो लोग नैतिक मूल्यों के प्रति समर्पित रहे, उनमें चौधरी चरण सिंह का नाम पहली पंक्ति में आता है। जहां मूल्यों और अनुशासन की बात आती थी, वे बज्र से कठोर थे; वहीं मानवीय दुःख–दर्द के प्रति वह कुसम से कोमल थे। गौतम बुद्ध और महात्मा गांधी, रामकृष्ण परमहंस और महर्षि दयानंद सरस्वती तथा रहबरे आजम दीनबंधु सर छोटूराम और महान क्रांतिकारी एवं भारत की प्रथम अस्थायी स्वतंत्र राष्ट्रीय सरकार के राष्ट्रपति राजा महेंद्र प्रताप के नैतिक मूल्यों की छाया में उनके असाधारण व्यक्तित्व का विकास हुआ था।

चौधरी चरणसिंह के विचारानुसार भारत की गरीबी का कारण गांव और खेती की निरंतर उपेक्षा है। उनके मत में देश की तरक्की का रास्ता खेतों की पगडंडी, बागों और खलिहानों तथा गांवों की गलियों से निकलता है, शहर के महलों से नहीं। जब तक गांवों का विकास नहीं होगा, हिंदुस्तान उन्नति के पथ पर नहीं बढ़ सकेगा। चौधरी साहब ने कुटीर और ग्रामीण लघु–उद्योगों के विस्तार पर जोर देते हुए प्राकृतिक संसाधनों को स्वदेशी तकनीक से उपयोग के लिए आह्वान किया। वे मशीनीकरण के विरोधी नहीं थे लेकिन उनकी मान्यता थी कि जो कार्य हाथों से हो, उसके लिए मशीनों का प्रयोग नहीं किया जाये। इससे बेरोजगारों को काम मिलेगा।

चौधरी चरणसिंह के शब्दों में, ''भ्रष्टाचार आज अपनी चरम सीमा पर भयानक रूप धारण कर चुका है। कोई ही जन–नेता होगा जो ईमानदारी से काम कर रहा होगा।

सर्वत्र ऊपर से नीचे भ्रष्टाचार का बोलबाला है। हमारी राजनीतिक व्यवस्था में पच्चीस ईमानदार लोग तैनात कर दिये जायें तो पांच वर्ष में भ्रष्टाचार को दूर किया जा सकता है।'' इन पंक्तियों के लेखक का चौधरी साहब से भारतीय क्रांति दल (बी.के.डी.) की स्थापना, इंदौर (मध्य प्रदेश) के राष्ट्रीय अधिवेशन नवंबर, 1967 के समय से घनिष्ठ रूप से राजनैतिक गतिविधियों एवं कार्यक्रमों में सक्रियता से रहा है। अपने एक पत्र में उन्होंने लेखक को लिखा था :–

''...आज जो भी लोग राजनीति के क्षेत्र में आते हैं, वे विधायक बनना चाहते हैं और विधायक बनते ही उनके मन के अंदर मंत्री पद की लालसा पैदा हो जाती है। किसी के सामने काई आदर्श नहीं है। सभी राजनैतिक पार्टियों का यही हाल है।'' कितना सटीक कथन है?

चौधरी चरण सिंह ने राजनीति और प्रशासन में पनपे जातिवाद के विरोध में एक पत्र लिखकर तत्कालीन प्रधानमंत्री श्री जवाहरलाल नेहरू को सुझाव दिया था कि अंतर्जातीय विवाह करने वाले युवकों को राजपत्रित पदों पर नियुक्त किया जाए लेकिन उनके विचारों को सही रूप में नहीं लिया गया। नेहरू जी चुप्पी साध गये।

चौधरी चरण सिंह आधुनिक भारत के निर्माता व जननायक थे। वर्तमान सरकारें यदि उनकी नीतियों का अनुसरण करें तो देश की तस्वीर बदल जायेगी। आज गरीबी की आवाज उठाने वाले अनेक नेता हैं, जो उनके नाम पर राजनीति कर रहे हैं लेकिन वे केवल भाषणों द्वारा ही जनता के प्रति कोरी हमदर्दी का प्रदर्शन करने के सिवाय व्यवहारिक पक्ष के लिहाज से शून्य हैं। चौधरी चरण सिंह के प्रति सरकार, राजनीतिज्ञों, विचारकों व समाज सेवी संस्थाओं आदि का उपेक्षापूर्ण रवैया और उदासीनता के कारण उनके जीवन–चरित्र एवं दर्शन का पूर्ण रूप से मूल्यांकन अभी तक संभव नहीं हुआ है। इस महान् विभूति का चरित्र बहुत उच्च स्तर का था। महान् व्यक्तित्व को शब्दों में समेटना असंभव है। उसका तो केवल एहसास ही किया जा सकता है।

भारत के पूर्व राष्ट्रपति डा. शंकर दयाल शर्मा कहते हैं कि ''चौधरी चरण सिंह जी की जो बात मुझे सबसे अधिक प्रभावित करती थी, वह यह कि वे हमारे देश की जमीन से जुड़े हुए थे। उन्हें इस देश की अस्मिता की गहरी पहचान थी। भारतीय किसानों के लिए चौधरी साहब ने जो कुछ भी किया, वह ऐतिहासिक महत्व का है। मैं उन्हें देश की जड़ों से जुड़ा नेता मानता हूं।'' पूर्व राष्ट्रपति ज्ञानी जैल सिंह का कहना या कि ''चौधरी चरण सिंह जी का जीवन, उनका देशभक्ति का जज्बा, उनकी ईमानदारी एक मिसाल है। हमें उनकी खूबियों से प्रेरणा लेनी है। वह बहुत साफ दिल इंसान थे। उनकी जिंदगी हमारे लिए उदाहरण है। हमें गर्व है कि ऐसे महापुरुष ने इस जमीन पर जन्म लिया। ऐसे महापुरूष के बताए रास्ते पर चलने का हम संकल्प लें।'' मार्क्सवादी कम्युनिस्ट पार्टी के महासचिव कामरेड श्री हरकिशन सिंह सुरजीत के शब्दों में, ''चौधरी चरण सिंह ने भारत के कौमी मुक्ति–संघर्ष और किसानों को जागरूक करने की दिशा में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाई। चौधरी साहब का नाम उनके कार्यों के कारण अमर रहेगा और उनके विचार किसानों की हमेशा रहनुमाई करते रहेंगे।'' पूर्व प्रधानमंत्री राजा मांडा श्री विश्वनाथ प्रताप सिंह ने लिखा है कि ''चौधरी चरण सिंह से संपर्क का मौका एक बार अमेरिका में उनकी बीमारी के दौरान मिला था जिसमें उन्होंने कहा था कि इस देश का क्या होगा? इसके बाद उनकी आंखों से आंसुओं की धारा फूट पड़ी। उनके इस एक ही वाक्य में पीढ़ी की पूरी वेदना, पूरा दर्द छिपा हुआ था। इसलिए मेरा कहना है कि देश, देश के गरीब, मेहनतकश किसान–मजदूर के लिए जो टीस चौधरी साहब के मन में थी, यदि उसे मैंने सही मायनों में नहीं पहचाना तो उनकी आशाएं पूरी नहीं होंगी। मुझे आशा और विश्वास है कि उन्होंने जो रास्ता हमें दिखाया है उस पर चलकर हम उनके सपनों का एक नया भारत बनायेंगे।''

युवा तुर्क रहे एवं हिंदुस्तान के पूर्व प्रधानमंत्री श्री चंद्रशेखर जी का मानना था कि ''चौधरी चरण सिंह जी की जब हम बात करते हैं तो हम उस मंत्र को याद करते हैं जो गांधी जी ने दिया था और जिसे चौधरी साहब ने अपने जीवन में उतारा था। भारत के विकास का पथ भारत के गांवों, खेत और खलिहानों से होकर गुजरता है। जब चौधरी साहब किसान की बात करते थे, तो किसान एक प्रतीक था। वह प्रतीक था बेबसी का, शोषण का, वह प्रतीक था उस दमन का, जिस दमन के सहारे आज का समाज चल रहा है। एक नया समाज बनाने का सवाल नहीं है, एक नया जीवन–दर्शन है। एक नई जिंदगी जीने का तरीका है– जिस जिंदगी में मेहनत करने वाला अपनी मेहनत का प्रतिफल पायेगा।

जिन लोगों ने आजादी की लड़ाई लड़ी, समाज को बदलने के लिए संघर्ष किया, उन लोगों में अगली कतार में चौधरी चरण सिंह जी थे। आशा है कि न केवल हम उनकी जिंदगी के सुनहरे हिस्सों को देखेंगे, न केवल याद करेंगे कि वह प्रधानमंत्री थे, वह कभी मुख्यमंत्री और भारत सरकार के गृह और वित्त मंत्री भी बने थे बल्कि यह याद करेंगे कि यह वह व्यक्ति था जो एक गरीब, गांव की गलियों से, किसान की झोंपड़ी से निकलकर आजादी की लड़ाई के दौर से निरंतर संघर्ष करता रहा। दुःख है कि चौधरी चरण सिंह अपनी जिंदगी में अपने सपनों का भारत नहीं देख सके। हमें इस दिशा में दो कदम आगे बढ़ाने के लिए सक्रिय होना है, तभी नया हिंदुस्तान बन सकेगा। भारत के उपप्रधानमंत्री श्री लालकृष्ण आडवाणी के शब्दों में, ''चौधरी चरण सिंह जी की स्पष्टवादिता, ईमानदारी, सादगी, प्रतिबद्धता और प्रमाणिकता की जो छाप है, वह राजनीति के क्षेत्र में कार्य करने वाले हर कार्यकर्ता के लिए दीपस्तंभ है। देश की राजनीति में खास

कर अर्थनीति को दिशा देने में चौधरी साहब का बड़ा योदान है।'' चौधरी चरण सिंह से लंबे समय तक जुड़े रहे पूर्व केंद्रीय मंत्री श्री सत्यपाल मलिक के विचार में, ''चौधरी चरण सिंह भारत के 'ह्रदय' देश के पिछड़ों और किसानों का मसीहा है जो गांव से दिल्ली आया है और आर्थिक नियोजन पर थीसिस दे रहा है। चरण सिंह, नेहरू जी की कब्र या बुत पर पत्थर नहीं फेंक रहे हैं। उन्होंने नीतियों की ठोस सरजमीन पर खड़े होकर जिंदा और ताकतवर नेहरू जी को उनकी गलती बताई थी, विरोध किया था। वक्त ने चौधरी चरण सिंह को सही साबित कर दिया।'' चौधरी चरण सिंह की धर्मपत्नी पूर्व विधायक व सांसद माता श्रीमती गायत्री देवी अपने पति के महान व्यक्तित्व को बहुत पसंद करती थीं। उन्हीं के शब्दों में, ''चौधरी साहब की एक बात मुझे बहुत अच्छी लगती है, ये जो भी एक बार सही समझकर मन में ठान लेते हैं, उस पर अड़ जाते हैं लेकिन उससे हटते नहीं, चाहे लाख कोई इनसे कहे। यद्यपि लोग इसी कारण इन्हें जिद्दी भी कहते हैं, लेकिन मैं समझती हूं जो सख्त नहीं होगा, वह अच्छा शासक नहीं हो सकता।'' भारत के कवि प्रधानमंत्री श्री अटल बिहारी वाजपेयी ने एक बार कहा था कि ''चौधरी चरण सिंह को हम ग्रामीण भारत का प्रतिनिधि, प्रवक्ता, जीती–जागती तस्वीर कह सकते हैं। भाव में, भाषा में, वेशभूषा में, भोजन में– चौधरी साहब वास्तविक भारत की तस्वीर पेश करते हैं।''

प्रख्यात इतिहासविद् एवं अखिल भारतीय जनसंघ के अध्यक्ष प्रोफेसर बलराज मधोक की चौधरी चरण सिंह के साथ मिलकर सन् 1974 में भारतीय लोक दल की स्थापना में महत्वपूर्ण भूमिका रही थी। वे भारतीय लोक दल के वरिष्ठ उपाध्यक्ष भी थे। प्रोफेसर मधोक के विचार में, ''चौधरी चरण सिंह हिंदुस्तान के बहुमुखी व्यक्तित्व के धनी राजनेता थे। उनका महान व्यक्तित्व था। वे किसान–कामगारों के हित चिंतक थे।

वास्तव में, चौधरी चरण सिंह एक व्यक्ति नहीं विचार थे, एक आंदोलन थे, अपितु एक ऐसा समर्पित जीवन थे, जिसके अंदर गांव और हिंदुस्तान का दर्द छिपा हुआ था। वे आम आदमी की खुशहाली के समर्थक थे। वे प्रत्येक भारतीय के लिए भोजन, वस्त्र, मकान के साथ–साथ स्वास्थ्य और शिक्षा की उचित व्यवस्था चाहते थे।

चौधरी चरण सिंह के प्रति सच्ची और हार्दिक श्रद्धांजलि तभी हो सकती है, जब एक सामान्य नागरिक से लेकर उच्च प्रशासनिक अधिकारी, राजनैतिक नेता एवं कार्यकर्ता, मिनिस्टर एवं अन्य कर्णधार भी देशभक्ति की भावना से भरे हों तथा राष्ट्र–निर्माण का दृढ़ संकल्प लेकर लोक–जीवन में उतरें।

चौधरी साहब आज हमारे बीच नहीं हैं, लेकिन हमारे पास उनके विचार हैं। हमें उनके बताए रास्ते पर चलना होगा, तभी हम उनके सपनों का नया हिंदुस्तान बनाने में कामयाब हो सकेंगे। इस पावन पुनीत अवसर पर मैं चौधरी चरण सिंह जैसे महान व्यक्तित्व के चरणों में नतमस्तक होकर उन्हें सादर प्रणाम करता हूं कि :–

''सत्य–सादगी और संयम था, मन में सदा सफाई थी।
चरण सिंह के चरित्र में, चिंतन की गहराई थी।।
मन में और कर्म में उनके, सदा रहा था अजब निखार।
इस समाज की कुरीतियों पर, किया उन्होंने सदा प्रहार।।
राजनीति में सदा उन्होंने, उज्ज्वल कर्म किये थे।
भेदभाव के बिना सदा वे, सबके लिये जिये थे।।
चरणसिंह जी इस भारत के, कुशल–लोकप्रिय नेता थे।
स्वार्थ–लोभ की दुनिया से थे दूर, बड़े युग चेता थे।।
इस भारत की खुशहाली के लिए, शुभकामना करता हूं।
~~इस पावन–पुनीत दिवस पर, नमन उन्हें मैं करता हूं।।~~ —

बोध कथा

गुरु दक्षिणा का रूप

एक ऋषि के पास एक युवक ज्ञान लेने पहुंचा। ज्ञानार्जन के बाद उसने गुरु को दक्षिणा देनी चाही। गुरु ने कहा, 'मुझे दक्षिणा के रूप में ऐसी चीज लाकर दो जो बिल्कुल व्यर्थ हो।' शिष्य गुरु के लिए व्यर्थ की चीज की खोज में निकल पड़ा। उसने मिट्टी की तरफ हाथ बढ़ाया तो मिट्टी बोल पड़ी, 'क्या तुम्हें पता नहीं है कि इस दुनिया का सारा वैभव मेरे ही गर्भ से प्रकट होता है? ये विविध वनस्पतियां, ये रूप, ये रस और गंध सब कहां से आते हैं?' यह सुनकर शिष्य आगे बढ़ गया। थोड़ी दूर जाकर उसे एक पत्थर मिला। शिष्य ने सोचा– क्यों न इस बेकार से पत्थर को ही ले चलूं। लेकिन उसे उठाने के लिए उसने जैसे ही हाथ आगे बढ़ाया तो पत्थर से आवाज आई, 'तुम इतने ज्ञानी होकर भी मुझे बेकार मान रहे हो। बताओ तो, अपने भवन और अट्टालिकाएं किससे बनाते हो? तुम्हारे मंदिरों में किसे गढ़कर देव प्रतिमाएं स्थापित की जाती हैं? मेरे इतने उपयोग के बाद भी तुम मुझे व्यर्थ मान रहे हो।' यह सुनकर शिष्य ने फिर अपना हाथ खींच लिया।

अब वह सोचने लगा– जब मिट्टी और पत्थर तक इतने उपयोगी हैं तो फिर व्यर्थ और क्या हो सकता है? तभी उसके मन से एक आवाज आई। उसने गौर से सुना। आवाज कह रही थी, 'सृष्टि का हर पदार्थ अपने आप में उपयोगी है! वास्तव में व्यर्थ और तुच्छ तो वह है जो दूसरों को व्यर्थ और तुच्छ समझता है। व्यक्ति का अहंकार ही एकमात्र ऐसा तत्व है, जिसका कहीं कोई उपयोग नहीं होता।' यह सुनकर शिष्य गुरु के पास आकर बोला, 'गुरुवर, आपको अपना अहंकार गुरु दक्षिणा में देता हूं।' यह सुनकर गुरु बहुत खुश हुए।

बहुत अधिकार मिल जाने पर मनुष्य का विचार दुषित हो जाता है। 'रिलियम पिर चौथम'

कैरियर गाइडेंस

डेयरी टेक्नोलॉजी में अनेक अवसर

हर साल मिलेंगी ८० हजार नौकरियां, दूध उत्पादन और खपत में भारत आगे

&vukfedk

देश में हर साल करीब 13.5 करोड़ टन दूध का उत्पादन होता है और पूरी दुनिया के दूध उत्पादन में भारत की हिस्सेदारी करीब 16 फीसदी है। देश की डेयरी इंडस्ट्री की कुल मार्केट वैल्यू करीब 2.6 खरब रूपए है और 2015 के अंत तक इसके बढ़कर 3.7 खरब होने का अनुमान है। दूध ा के उत्पादन और खपत में भारत दुनिया में पहले नंबर पर है। एसोचैम के अनुसार डेयरी इंडस्ट्री सालाना 4.2 फीसदी की दर से बढ़ रही है। फिलहाल, करीब 9 करोड़ लोगों के लिए डेयरी इंडस्ट्री रोजगार का जरिया है, किन सरकारी प्रोत्साहन के चलते इस क्षेत्र में रोजगार और आंत्रप्रेन्योरशिप के मौके बढ़ रहे हैं। डेयरी टेक्नोलॉजी छात्रों के लिए बेहतर विकल्प है, क्योंकि 2020 तक इस फील्ड में करीब चार लाख नई नौकरियां पैदा होने का अनुमान है। दूध और दुध उत्पादों की बढ़ती मांग को पूरा करने के लिए इस इंडस्ट्री के विकास की दर 6 फीसदी किए जाने की जरूरत है। इसके अलावा देश की डेयरी इंडस्ट्री अभी भी असंगठित और पुरानी तकनीकों पर आधारित है।

dk&vkijfVo vkj ikboV M;jh dh 50 Qhlnh l T;knk fgLlnkjh

देश की डेयरी इंडस्ट्री के विकास में 1970 में नेशनल डेयरी डेवलपमेंट बोर्ड द्वारा शुरू किए गए ऑपरेशन फ्लड की सबसे अहम भूमिका रही है। इसके चलते ही भारत दूध उत्पादन में शीर्ष स्थान हासिल कर सकता है। प्रोजेक्ट की शुरुआत में 1971 से 1996 तक डेयरी इंडस्ट्री के विकास में सहकारी क्षेत्र की महत्वपूर्ण भूमिका थी। 1991 में आर्थिक उदारीकरण की शुरुआत के बाद डेयरी इंडस्ट्री में प्राइवेट सेक्टर का प्रवेश हुआ। इसमें इंडस्ट्री का विकास और तेज हुआ। हालांकि, देश के ऑर्गेनाइज्ड डेयरी मार्केट में अभी भी को–ऑपरेटिव्स की लगभग 60 फीसदी हिस्सेदारी है।

oVjujh lkbl d dkl dj Hkh y ldr g ,Vh

डेयरी टेक्नोलॉजी पहले वेटरनरी और एनिमल हस्बेंडरी कोर्स का हिस्सा हुआ करता था, लेकिन अब कई संस्थानों में अलग से इसके डिग्री और डिप्लोमा कोर्स मौजूद हैं। फिजिक्स, केमिस्ट्री और मैथ्स या बायोलॉजी में 10+2 कर चुके छात्र इसके बैचलर कोर्स में प्रवेश ले सकते हैं। अधिकतर संस्थानों में प्रवेश एंट्रेंस एग्जाम के जरिये मिलता है। वेटरनरी काउंसिल ऑफ इंडिया भी यूजी कोर्सेज में प्रवेश के लिए हर साल ऑल इंडिया एंट्रेंस एग्जाम आयोजित करती है। इसके जरिये सरकारी संस्थानों में एडमिशन मिलता है। मास्टर कोर्सेज में प्रवेश के लिए एंट्रेंस टेस्ट का आयोजन इंडियन काउंसिल ऑफ एग्रीकल्चरल रिसर्च करती है।

çkboV lDVj e ukdjh d T;knk volj] vk=iU;kjf'ki dk ekdk Hkh

छात्रों के लिए नौकरी के अधिकतर मौके डेयरी फार्म, को–ऑपरेटिव तथा मिल्क प्रोडक्ट प्रोसेसिंग और मैन्युफैक्चरिंग इंडस्ट्री में हैं। इसके अलावा फूड इंडस्ट्री, ग्रामीण बैंकों तथा क्वालिटी कंट्रोल संगठनों में भी उन्हें नियुक्त किया जाता है। टीचिंग और आर एंड डी संस्थानों के लिए काम करने के साथ–साथ छात्र आंत्रप्रेन्योरशिप का विकल्प भी चुन सकते हैं। इसके लिए सरकारी प्रोत्साहन भी मिलता है। डेयरी इंडस्ट्री में प्राइवेट सेक्टर की बढ़ती भागीदारी के चलते सरकारी के मुकाबले इसमें रोजगार के मौके ज्यादा हैं।

2 l 3 yk[k :- lkykuk 'k#vkrh idt

डेयरी टेक्नोलॉजी का कोर्स करने वाले छात्रों को शुरुआत में ट्रेनी के रूप में नियुक्त किया जाता है। उनका शुरुआती पैकेज दो से तीन लाख रुपए सालाना तक हो सकता है। दो–तीन वर्ष के अनुभव के बाद मैनेजर बनने पर उनकी सालाना कमाई पांच से छह लाख रुपए तक हो सकती है। हालांकि, डेयरी फार्म या आइसक्रीम यूनिट से भी इतनी कमाई की जा सकती है। वहीं, क्रिसिल के अनुसार पिछले दो दशकों में डेयरी प्रोडक्ट्स की मांग दूध के मुकाबले ज्यादा बढ़ी है और इसमें पैकेज भी बेहतर होता है।

euteV dh fMxh gk rk feyxh eupkgh ukdjh

भारत में दूध देने वाले मवेशियों की संख्या दुनिया में सबसे ज्यादा है, लेकिन औसत उत्पादन के मामले में देश काफी पीछे है। इसका सबसे बड़ा कारण डेयरी फार्म्स का खराब प्रबंधन है। इसलिए, बड़ी डेयरी कंपनियां नियुक्ति में उन छात्रों को वरियता देती है जिनके पास मैनेजमेंट की डिग्री हो। ऐसे छात्रों का पैकेज ज्यादा से ज्यादा होता है और कॅरिअर में आगे बढ़ने की संभावनाएं भी ज्यादा होती हैं। लेकिन 10 से 15 फीसदी छात्र ही इस मापदंड पर खरे उतरते हैं।

देश पर एकछत्र राज करने के लिए गिराते रहे शिक्षा का स्तर

(अभिभावकों की राय से शिक्षा में सुधार हो)

सन 1837 में ब्रिटिश पार्लियामेंट में एक प्रस्ताव रखा गया कि क्या योजना बनाई जाए कि भारत वर्ष में लंबे समय तक हम राज कर सकें सभी ब्रिटिश सांसदों के विचारों के बाद लार्ड मैकाले ने अपने विचार रखे कि हिंदुस्तान की शिक्षा नीति बदलने के आधार पर हम लंबे समय तक भारत वर्ष पर राज कर सकते हैं। अतः लार्ड मैकालेजी का सभी सांसदों ने स्वागत किया एवं मैकाले जी को ही उनकी शिक्षा नीति लागू करने के लिए भारत भेजा और अंग्रेजों के गुलाम बने रहने की शिक्षा नीति लागू की गई और 200 वर्ष तक राज किया।

मैकालेजी के वापस जाने के बाद नई ब्रिटिश सरकार ने मैकालेजी की शिक्षा नीति बदलकर वायसरायों की सहमति से सन 1880 के बाद पंडित जवाहरलाल नेहरू, महात्मा गांधी, सुभाष चंद्र बोस, डा. राजेंद्र प्रसाद, मोहम्मद जिन्हा इत्यादि भारतीयों को इंग्लैंड पढ़ने के लिए भेजा इन्हीं महापुरुषों ने अंग्रेजों को भारत छोड़ने के लिए मजबूर कर दिया। अतः ब्रिटिश सरकार द्वारा शिक्षित किए भारतीयों से ही हार मानकर 15 अगस्त 1947 को अपना बोरिया बिस्तर बांधकर जाना पड़ा। शिक्षित नहीं करते तो अंग्रेज हजारों साल राज करते।

200 वर्ष तक अशिक्षित भारतीयों पर राज करने के बाद सत्ता छोड़ते समय वाईसराय लार्ड माउंट बैटन या अन्य अधिकारियों ने पंडित जवाहरलाल नेहरू ने जन प्रतिनिधियों को शायद यह कहा होगा कि आजाद भारत के जनप्रतिनिधियां ब्रिटिश सरकार ने आपको इंग्लैंड में पढ़ाकर जो भूल की है वह आप मत करना यदि आपने भारतवासियों को शिक्षित कर दिया तो हमारी तरह आपको भी सत्ता से हाथ धोना पड़ेगा। अतः सभी जन प्रतिनिधियों ने ऊंचे स्वर में यही कहा होगा कि तथाअस्तु हम ऐसा नहीं करेंगे। हम अपने नागरिकों को पढ़ाना तो दूर हम शिक्षित बेरोजगार बना देंगे। ज्ञान नहीं देंगे। डिग्रियां दे देंगे ताकि वह घर पर भी काम कर सकें। हमारे महापुरुष यदि इंग्लैंड पढ़कर नहीं आते तो क्या 1947 में भारत आजाद हो जाता।

15 अगस्त 1947 में सत्ता संभालते ही शिक्षा को कैसे गिराया, मुसलमान भाईयों व निम्न जातियों को शिक्षा से दूर रखा गया इन्हीं दो समूहों को अनपढ़ बेरोजगार बनाते रहे और इनके 50 प्रतिशत वोट बैंक व जातिय आधार पर टिकट बंटवारा करके 60 वर्ष तक राज किया। यदि मुसलमान भाइयों, निम्न जातियों व किसानों को शिक्षित कर देते तो शायद ही इतने लंबे समय तक एक पार्टी व वंशानुकुल पीढ़ी दर पीढ़ी राज करते।

जिस राज्य में शिक्षा का विस्तार हुआ सत्ता बदलती गई राज्य में जो जिला शिक्षा में आगे गया सांसद/विधायक बदलते गये जो अशिक्षित रहे वहां एक छत्र राज किया जैसे नागौर जिला वंशवाद का गढ़ रहा, मेडिकल व इंजिनियर कालेज तो छोड़े केंद्रीय विद्यालय भी नहीं बनने दिया। 60 वर्षों तक जयपुर व दिल्ली में मंत्री रहे प्रथम बार सी.आर. चौधरी सांसद बने हैं। नागौर को शिक्षा, जल, परिवहन व रोजगार से दूर रखकर एक परिवार ने 60 वर्षों तक मंत्रिमंडल में रहकर राज किया।

यह तो धन्य हो देवेगोड़ा जी एक किसान नेता होने के कारण पंचायत चुनाव पार्टी के सिंबल से कराने शुरू कर दिया नहीं तो दूसरी पार्टियां 100 वर्ष तक भी सत्ता में नहीं आती क्योंकि अशिक्षित किसानों की एक ही पार्टी हमदर्दी बनी थी। मुसलमानों, गरीबों व किसानों तक शिक्षा का केवल दिखावा करते रहे जैसे ही निम्न श्रेणी पढ़ती नया अधिनियम आ जाता ताकि यह कुछ देश के बारे में सोच ही न सके केवल वोट देते रहें। जो निम्न कानूनों से शिक्षा का स्तर गिराकर राज करते रहे अपने बलबूते पर शिक्षित होकर यह सत्ता परिवर्तन इस बार नवयुवकों ने किया है।

f'k{kk Lrj fxjus dk dkj.k &

1. आजादी के बाद अंग्रेजी कक्षा 6 से क्यों लागू किया व अंग्रेजी की किताबें कक्षा 6 में पढ़ाई गई ताकि हमारा वोट बैंक कक्षा 5 तक पढ़े व घर बैठ जाए कक्षा 6 में अंग्रेजी की यदि प्रथम कक्षा की पुस्तक होती तो निम्न श्रेणी के बच्चे भी पढ़ सकते थे।
2. अंग्रेजी कक्षा 3 से की किन्तु कक्षा 5वीं तक फेल नहीं किया जायेगा अशिक्षित वोट बैंक शिक्षित न हो जाए।
3. जनता की आवाज से अंग्रेजी कक्षा 1 से शुरू की गई और 8वीं बोर्ड परीक्षा समाप्त कर दी।
4. कक्षा 8 तक किसी को फेल नहीं किया जायेगा चार मिडिल स्कूलों के सभी छात्र 1 सैकेंडरी स्कूल में प्रवेश लेते तो कक्षा 9 में 150 तक छात्र हो गए सेक्शन नहीं बढ़ाये गये अब 8वीं बोर्ड के साथ कक्षा 9 के सेक्शन बढ़ाया जाए।
5. 13 व 14 वर्ष का बच्चा सीधा 8वीं में प्रवेश लेकर 8वीं पास करेगा ताकि कक्षा 10 पास न कर सके।
6. जिला समान परीक्षा व आठवीं बोर्ड की परीक्षा से सरकार का कोई खर्चा नहीं होता था फीस अभिभावक देते थे। अतः अब क्लास 5वीं की समान परीक्षा व 8वीं की बोर्ड परीक्षा लागू की जाये।
7. 8वीं तक पास किया गया ग्रामीण व निम्न परिवार का बच्चा 10वीं पास नहीं कर सकेगा। तो 10 साल तक घर के कार्य से भी वंचित रह जाता है या 8वीं पास को कम से कम ड्राईवर

अतिथि का आदर सत्कार करने में जो कभी नहीं चूकता, उस पर कभी कोई विपत्ति नहीं आती। 'तिरूवल्लुवर'

लाईसेंस तो दिया जाये व वन विभाग या चपरासी की नौकरी दी जाये ताकि कार्यालय की सुरक्षा बनी रहे।

8. जब 80 प्रतिशत वोट गांव के हैं तो पिछले 60 वर्षों से गांव में साईंस की स्कूल क्यों नहीं खोली गई अब प्रयास किये जा रहे हैं तो अध्यापक नहीं दिये गये।

9. पिछले 60 वर्षों से वोटों के लिए स्कूल क्रमोंति तो कर दी जाती थी किंतु अध्यापक नहीं दिये जाते थे अध्यापकों की कमी के कारण बीएड धारियों को एक वर्ष तक सरकारी विद्यालयों में कार्य करने के पश्चात ही भर्ती फार्म भराया जाये जैसे मेडिकल छात्रों के लिए किया गया।

10. अभिभावक किताबें दे सकते हैं किन्तु विद्यालय में टेबल, बेंच, रोशनी, पंखे व अध्यापक नहीं दे सकते। पिछले कुछ वर्षों से अभिभावकों वाला काम सरकार कर रही है पोषाहार, किताबें, फीस दे रही है किंतु अध्यापक व अन्य सुविधा नहीं। अतः किताबों व पोषाहार के स्थान पर नगद धन दिया जाए भ्रष्टाचार कम होगा स्टाफ व छात्रों का समय बरबाद नहीं होगा। विद्यार्थियों को पुस्तकें अक्टूबर तक नहीं मिलती।

11. पिछले वर्षों में अधिकारियों द्वारा पोषाहार की जांच होती रही है शिक्षा की नहीं अतः स्टाफ भी पोषाहार का ध्यान ज्यादा रखते हैं पढ़ाई का नहीं। स्टाफ पोषाहार का हिसाब रखते हैं और प्रधानाध्यापक जी सब्जी मंडी में सब्जियां खरीदते हैं और अधिकारी पोषाहार चखने का दायित्व निभाते रहे हैं। अतः अधिकारी महोदय को शिक्षा व खेलों की जांच करनी चाहिए।

12. सरकारी विद्यालयों को स्टाफ 80 प्रतिशत से ऊपर अंक वाले व योग्य होते हैं जबकि निजी विद्यालयों में 60 प्रतिशत से कम होते हुए भी पढ़ाने का दायित्व निभाते हैं जबकि सरकारी विद्यालयों में योग्य स्टाफ से मतगणना, जन्म मृत्यु प्रमाण पत्र, राशन की दुकान, वोटर लिस्ट और निर्माण कार्यों पर लगाया जाता है। उपरोक्त कार्य के लिए सेवानिवृत स्टाफ व बीएड बेरोजगारों को लगाया जा सकता है।

13. पिछले वर्षों से थोड़ी सर्दी, गर्मी व बरसातों के समय स्कूलों की छुट्टियां करने की परंपरा बन गई है बच्चे नहीं होंगे किंतु स्टाफ आएगा सरकारी विद्यालय सर्दियों में 10.30 से 4.30 बजे तक खुलते हैं उस समय सर्दी नहीं होती इससे छोटे बच्चों के शिक्षा पर प्रभाव पड़ता है। अतः मौसम परिवर्तनों के कारण शिक्षा शिविर पंचाग में छुट्टियों में भी परिवर्तन मौसम के बदलाव के अनुसार कर दिया जाए जैसे सर्दी जनवरी व फरवरी में अधिक पड़ने लगी है व गर्मी जुलाई में।

14. पिछले वर्षों से विधायक व सांसद कोषों से विद्यालय में खूब भवन बने हैं वोटों के लिए सब नीचे खाली पड़ी भूमि पर बनाए जाते हैं ताकि उद्घाटन का पत्थर नीचे लगे। जब शौचालय बनाने की जगह नहीं रही है। प्रार्थना व सूर्य नमस्कार व योगा कहां करायेंगे। खाली जमीन नहीं बची। एक लोकप्रिय सरकार का दायित्व है कि सभी प्रकार के सरकारी निर्माण दूसरी व तीसरी मंजिल पर ही कराने का आदेश दें ताकि खाली पड़ी भूमि कभी भी काम आ सकती है।

15. शारीरिक शिक्षकों का भी एक मापदंड लागू किया जाये कि 5 या 10 वर्ष में एक शारीरिक शिक्षक को नेशनल के कितने खिलाड़ी बनाने चाहिए मान्यवर 80 प्रतिशत ऐसे शारीरिक शिक्षक होंगे जो नेशनल तो क्या 35 वर्ष की सर्विस में राज्य व जिला स्तर का एक भी खिलाड़ी नहीं बना सके। अभी केरल में नेशनल खेलों में राजस्थान का 20वां स्थान देखकर हमें दुख होना चाहिए।

16. राज्य व केंद्रीय कर्मचारियों का शिक्षा भत्ता बंद किया जाये जब सरकार सरकारी कर्मचारी को शिक्षा भत्ता देगी तो वह सरकारी विद्यालयों में क्यों पढ़ायेंगे। जब सरकार शिक्षा भत्ता देती है तो अपने विद्यालय क्यों खोलती है बिलों के आधार पर जब फीस के पैसे मिल जाते हैं तो सरकारी विद्यालयों में कौन पढ़ाएगा। अतः सरकारी विद्यालयों के अभिभावक अध्यापकों व कर्मचारियों से यही पूछते हैं कि आप अपने बच्चों को सरकारी स्कूल में क्यों नहीं पढ़ाते।

17. आरटीआई के तहत ज्ञात हुआ है कि एक सरकारी विद्यालय के छात्र का खर्चा सरकार का करीब 1000 से 1500 रूपये प्रतिमाह पड़ता है। पिछले 30 वर्षों के आंकड़े निकाल कर देखें तो सरकारी विद्यालयों के 5 प्रतिशत छात्र भी किसी भी सरकारी विभाग में नौकरी नहीं लगे है तो यह अरबों रूपये सालाना सरकार क्यों खर्च करती हैं। यदि सरकार प्रति छात्र के अनुसार 500 रूपये प्रतिमाह दे तो वह अपने बच्चे को कहीं भी पढ़ा सकते हैं और सरकार के अरबों रूपये की बचत होगी।

18. खेलों में संस्कृत शिक्षा विभाग व राजस्थान शिक्षा विभाग के खिलाड़ी एक साथ प्रतियोगिताओं में भाग नहीं ले सकते, जबकि एसबीएसई दिल्ली बोर्ड के छात्रों को राजस्थान शिक्षा बोर्ड के साथ उन्हें दिल्ली बोर्ड के साथ खेलने का मौका मिलता है। पिछले वर्ष दिल्ली बोर्ड को शिक्षा मंत्री ने राजस्थान बोर्ड से अलग कर दिया था किंतु अंतिम दिनों में दबाव के कारण उसे शामिल किया गया।

19. खेलों में जिला स्तर का 1 अंग, राज्य स्तर का 3 अंक व नेशनल के 5 अंक पुनः लागू हों। नेशनल के विजेताओं को 17 व 19 साल के बच्चों के साथ–साथ 14 वर्ष के छात्रों को भी नगद ईनाम दिया जाये। विधायक व सांसद भी अपने कोष से खेलों के लिए धन दें और ग्राम पंचायत को अपने विद्यालय के लिए खेल फंड दिया जाए। पोषाहार की तरह अधिकारियों द्वारा शिक्षा व खेलों की जांच विद्यालय में की जाए।

20. खेल एकेडिमियों के लिए चयन प्रक्रिया अप्रैल में की जाए चयनित खिलाड़ियों को ही ग्रीष्मकालीन खेल कैंपों में ले जाया जाए। सादुल स्पोर्ट्स बीकानेर कक्षा 6 के छात्रों को शारीरिक क्षमता परीक्षा की मेरिट के आधार पर चयन करके ग्रीष्मकालीन कैंप व 3 माह का प्रशिक्षण देकर भिन्न–भिन्न

खेलों में भेजा जाए। क्रिकेट की तरह अन्य खेलों को भी मीडिया द्वारा प्रचार प्रसार करना चाहिए।

उपरोक्त सभी नियमों से शिक्षा का स्तर गिरता गया है और सरकार के वोट बैंक बनते गए किन्तु सन 2000 के बाद गरीब व किसानों के बच्चों के हालातों को देखते हुए कुछ मध्यम वर्ग के बेरोजगारों ने कम लागत से गांव–गांव में छोटे–छोटे निजी विद्यालय बनाकर मुसलमानों गरीबों व किसानों के बच्चों को कड़ी मेहनत करके 100–200 रूपये प्रतिमाह की फीस से अच्छी शिक्षा देने लगे। तो दिल्ली में बैठी सरकार घबरा गई कि मुसलमान, निम्न जाति व किसान यदि पढ़ जाएंगे तो हमारा 60 वर्षों का राज समाप्त हो जाएगा।

अतः दिल्ली में बैठे लंबे समय से देश पर राज करने वालों ने ऐसा कानून बना दिया ताकि गांव के यह छोटे–छोटे निजी विद्यालय व सरकारी विद्यालयों के शिक्षा प्रेमी अध्यापक अच्छी शिक्षा नहीं दे सके। नहीं तो अंग्रेजों की तरह हमारे को भी सत्ता से हाथ धोना पड़ेगा। अशिक्षितों के कारण ही लंबे समय तक राज किया जा सकता है। अतः निशुल्क शिक्षा अधिनियम 2009 लागू किया गया। इस अधिनियम को लागू करते समय यदि सरकार 80 प्रतिशत मुसलमानों, निम्न जातियों व किसानों से राय लेती तो यह अधिनियम लागू नहीं हो पाता

1. अधिनियम 2009 के अनुसार गांव के निजी विद्यालयों के लिए 5 बीघा व शहरों के लिए 2 बीघा भूमि। शौचालयों, खेल मैदान कार्यालय, लाइब्रेरी, स्टाफरूम, स्टोर रूम के साथ–साथ नियमानुसार 20 गुणा 24 फुट के क्लास रूम होंगे। मान्यवर इतने बड़े निर्माण के लिए लगभग 3 करोड़ की लागत के डर से निम्न श्रेणी के बेरोजगार बीएड धारियों ने निजी विद्यालय खोलने बंद कर दिये और एक समुदाय विशेष के ही विद्यालय खुल रहे हैं क्योंकि उनके ऊपर यह अधिनियम लागू नहीं है।

2. 25 प्रतिशत निशुल्क शिक्षा मनरेगा से भी बड़ी बुराई का महामण्डल है मनरेगा से सरकारी खजाने से अरबों रूपये खर्च हो रहे हैं लाभ 20 प्रतिशत भी नहीं केवल वोट बैंक, कामचोर व भ्रष्टाचार बड़ा है। किंतु 25 प्रतिशत निशुल्क शिक्षा से तो आने वाले 10–12 वर्ष के पश्चात अरबों रूपये खर्च होंगे। तो सरकारी विद्यालयों की क्या आवश्यकता रह जायेगी। निशुल्क योजना के लिए कितने कार्यालय व स्टाफ कार्यरत और सरकारी विद्यालयों का स्टाफ निजी विद्यालयों की निशुल्क शिक्षा की जांच करते रहते हैं तो सरकारी विद्यालयों की शिक्षा को कौन देखता है। संपन्न परिवारों के बच्चे पहले से ही निजी अध्ययन कर रहे हैं। इस अधिनियम से 25 प्रतिशत निशुल्क पा लेंगे तो सरकारी विद्यालयों में कौन पढ़ेगा। पिछले वर्ष कई सरकारी विद्यालयों में कक्षा प्रथम में एक भी छात्र ने प्रवेश नहीं लिया तो सरकारी विद्यालयों के भवन व स्टाफ का क्या होगा। सरकार कम छात्रों को दूसरे विद्यालय में भेज रही है तो खाली पड़े करोड़ों रूपये के भवन खण्डर हो जायेंगे।

निशुल्क शिक्षा में कालबेलिया, भील, ढोली, लोहार बलाई, वाल्मिकी व नट समाज का शायद एक भी छात्र ने प्रवेश नहीं लिया क्योंकि ये लोग जाति प्रमाण पत्र व फार्म भी भरने जैसी जानकारी नहीं रखते। निशुल्क शिक्षा में भी संपन्न परिवारों के बच्चों ने प्रवेश लिया है जैसे ट्यूशन व निजी विद्यालयों में पढ़ाकर जवाहर नवोदय विद्यालय में प्रवेश पा लेते हैं। निशुल्क शिक्षा अधिनियम भी एक ऐसा अधिनियम है जैसे 20 वर्ष पूर्व दिल्ली में बैठी सरकार ने प्रौढ शिक्षा अधिनियम लागू किया था जिससे सरकारी शिक्षक बूढ़ों को पढ़ाने के साथ आंकड़े बनाते रहे। दादा–दादी तो पढ़ नहीं सके किंतु उन बूढ़ों के पौते व पोतियां अनपढ़ रह गये।

3. न्यायपालिका का हम आदर करते हैं किंतु कुछ नियम केवल उच्च वर्ग के लिए ही बन जाते हैं जैसे बच्चों को ताड़ना, मारना, खड़ा करना, डाटना, मुर्गा बनाना आंख दिखाना दण्डनीय अपराध घोषित किया है इस नियम से आए दिन अभिभावक व स्टाफ के बीच राजनैतिक निकालने के लिए झगड़े होते रहते हैं निजी विद्यालयों में फीस बकाया के कारण छात्र को मारने के इलजाम लगाये जाते हैं। शिक्षक ने अपनी नौकरी बचाने के लिए पढ़ाने के बजाय नौकरी की चिंता रखने लग गये हैं। निम्न वर्ग के किसान व मजदूर विद्यालयों में आकर यहां तक कहते हैं कि हडिड हमारी चमड़ी आपकी, केवल मेरा बच्चा पढ़ना चाहिए। हमें ना तो टाईम मिलता है और ना ही हम अमीरों की तरह ट्यूशन पढ़ा सकते हैं। यह नियम केवल उच्च वर्ग के लिए ही है। क्योंकि उनके बच्चों को गृह कार्य परिवार वाले या ट्यूटर करवा देते हैं।

4. निजी विद्यालयों के क्रमोंत के लिए कई प्रकार के कागज मांगे जाते हैं जबकि सरकारी विद्यालयों को एक जनप्रतिनिधि की घोषणा से क्रमोन्नत किया जाता है ऐसा भेदभाव क्यों। निजी विद्यालय भी सरकार का बोझ हल्का कर रहे हैं। इन नियमों में कुछ ढील दी जाये।

5. 3 वर्ष तक के लिए फीस निर्धारण लागू की गई है। मान्यवर महंगाई व कर्मचारी के लिए भी 3 वर्ष तक डीए नहीं बढ़ाये जाते। फीस निर्धारण तो बड़े विद्यालयों के लिए लागू होनी चाहिए किंतु उनको इस अधिनियम से अलग रखा गया है। डाक्टर, वकील, अकाउंटेंट व अन्यों की भी क्या फीस निर्धारण सरकार द्वारा की जाती है। इसे बंद किया जाये इससे अभिभावकों व विद्यालयों के बीच झगड़े व भ्रष्टाचार बढ़ गया है। देशवासी अन्य समान भी अच्छा व सस्ता देखकर ही भिन्न–भिन्न दुकानों से खरीदते हैं।

6. निशुल्क अधिनियम में एक समुदाय विशेष व निजी विद्यालय को शामिल नहीं किया गया बच्चे तो उनमें भी सभी समुदाय के पढ़ते हैं ये गुलामी को दर्शाता है। अतः निशुल्क अधिनियम पर सरकार को पुनर्विचार करना चाहिए नहीं तो मनरेगा की तरह ये भी एक सरकार के लिए मुसीबत खड़ी होगी।

7. वंचित छात्र अधिनियम के कारण कोई भी अभिभावक बिना स्थानांतरण पत्र लिये ही अन्य विद्यालयों व राज्य में प्रवेश दिला देते हैं एवं जन्म तारीख भी बदल दी जाती है। इस अधिनियम से ही अभी पंचायत चुनाव में उम्मीदवारों लिए हजारों फर्जी 8वीं की टीसी लेकर जमा कराई गई है जो हमारी सरकार व जांच अधिकारियों के लिए कितना सिरदर्द बन गया।

8. हमारे जिला शिक्षा अधिकारी व ब्लॉक शिक्षा अधिकारी महोदय को कुछ अधिकार दिये जाएं स्टाफ के स्थानांतरण संबंधी कार्य के लिए राय ली जाये। जिला व ब्लाक शिक्षा अधिकारियों को कम से कम 3 महीने में अलग–अलग जाकर सरकारी विद्यालयों का निरीक्षण करने के लिए वाहन सुविधा दी जाए। इस प्रकार दोनों अधिकारियों द्वारा एक वर्ष एक विद्यालय का छह बार निरीक्षण हो जायेगा।

9. शौचालय तो सरकार बना रही है, बहुत ही अच्छी बात है किंतु उनकी सफाई की क्या व्यवस्था होगी। पहले भी कई विद्यालयों में शौचालय बने हुए हैं किंतु सफाई के डर से ताले लगे रहते हैं। पाठशाला में तो क्या जिलाधीश, उपखण्ड व तहसील कार्यालयों के सार्वजनिक शौचालय के अंदर प्रवेश करते ही बड़ी नफरत होती है।

10. पुस्तकों में पिछले 60 वर्षों से यही पढ़ाया जाता रहा है कि हमारे राजा महाराजा खूब लड़े पर हार गये और अंग्रेजों ने हजारों किलोमीटर से दूर से आकर हमारे देश पर 200 वर्ष तक राज किया। यहां की धन संपत्ति लूट कर ले गये। कोमनवेल्थ खेल, क्रिकेट, अंग्रेजी भाषा, चाय नाश्ता व पाश्चात्य सभ्यता उन्हीं की देन है। अतः 1947 से पहले के बने पाठयक्रम में कुछ बदलाव किया जाये। जैसे 25 प्रतिशत रोजगार संबंधी, 25 प्रतिशत देश प्रेम व महापुरूषों, 20 प्रतिशत संस्कारी व 20 प्रतिशत अच्छा जनप्रतिनिधि, अधिकारी, खिलाड़ी सैनिक व कर्मचारियों के बारे में पढ़ाया जाए। पूर्व इतिहास केवल 10 प्रतिशत ही काफी है।

आज के नवयुवकों को आगे बढ़ने के लिए नया इतिहास पढ़ाया जाए न कि पुराना, बिना धार्मिक भेदभाव के क फोर कबूतर नहीं क फोर कम्प्यूटर पढ़ाया जाए।

अंत में फूट डालो राज करो की नीति वालों से हमारे स्वतंत्रता सैनानी ने राज सत्ता संभाली थी। अंग्रेजों ने निम्न जातियों किसानों व अल्पसंख्यकों को शिक्षा न देकर फूट डालो राज करो की नीति अपनाई थी। हमारे देशवासी नकल कर रहे हैं यदि सभी भारतवासी अच्छी शिक्षा प्राप्त करते तो सांप्रदायिक दंगे ही बंद हो जाएंगे और प्रजातंत्र का प्रत्येक शिक्षित नागरिक सिंबल पर वोट न देकर उसके सिद्धांत व अच्छी सरकार देने वाले को वोट देगा और शिक्षित नागरिक ही प्रजातंत्र का महत्व समझेगा। जैसे अभी कुछ वर्षों से शिक्षित नवयुवक समझने लगे हैं।

वैवाहिक विज्ञापन

- SM4 Jat Girl (DOB 13.09.1987) 27.6/5'5" M. Tech. Employed as Lecturer at Rohtak. Avoid Gotras: Nandal, Pawaria, Ahalawat. Cont.:09996060345, 09811658557
- SM4 Jat Girl (DOB 05.09.1991) 23.9/5'6" M.Tech. (CSE) Employed in a reputed University near Chandigarh. Avoid Gotras: Malik, Hooda, Rana. Cont.:0172-2277177, 09796844991
- SM4 Jat Girl (DOB14.09.1991) 23.9/5'6" M.Sc. Physics from P.U. with 74% marks. Avoid Gotras: Sehrawat, Kadian, Malik. Cont.:09815805575
- SM4 Jat Girl 23/5'3" M.Sc. Physics from MDU Rohtak with 65% marks, B.Ed. Avoid Gotras: Sehrawat, Sangwan, Malik. Cont.:09466538100
- SM4 Jat Girl 29/5'7" MBA. M.Com. Preferred Chandigarh (Try-city) Avoid Gotras: Roperia, Kharinta, Ghanghas. Cont.:09417350856, 09560078813
- SM4 Divorced (No Issue) Jat Girl 32/5'5" B.A.. M.A. (Socialogy), M.A. Hons. (Psychology) Working as Psychologist in a private Super-Speciality Hospital. Avoid Gotras: Ahlawat, Kadian, Joon. Cont.:09872793283
- SM4 Jat Girl 24/5'7" B.A. Doing M.A. Avoid Gotras: Ghanghas, Malik. Cont.:09466018547
- SM4 Jat Girl (DOB18.10.1984)30.8/5'3" M.Com. from Kurukshetra University. Doing job in Share Market, Bombay Stock Exchange Agent office in Panchkula. Brother, Elder Sister and Father in Government Job. Avoid Gotras: Malik, Kadian, Khatri. Cont.:09468089442, 08427098277. E.mail: somvirkdn@gmail.com, somvir@hotmail.com
- SM4 Jat Girl (DOB 12.09.1989) 26/5'6" M.Sc. Microbiology & B.Ed. Working as Micrologist in I.T.C.Panchkula. Avoid Gotras: Lather, Malik, Kundu. Cont.:09780938830
- SM4 Jat Girl 26/5'3" MCA, MBA Employed as supervisor in Central Govt. on contract basis. Avoid Gotras: Bagri, Nehra, Nain. Cont.:09417415367
- SM4 Jat Girl (DOB 24.09.1990) 24.8/5'5" .B.Com. M.Com. Pursuing B.Ed. Avoid Gotras:Tanwar, Jakhar, Sheoran. Cont.:08284050424
- SM4 Jat Girl 25/5'6" M.C.A., B.Ed. Employed in M.N.C, Delhi. Avoid Gotras: Chhikara, Dalal, Tomar, Shokeen. Cont.:09302951802, 09313433046
- SM4 Jat Girl, (DOB 12.05.1988) 27/5'2" M.Sc. (Microbiology) Working as Senior Lab Technician in AL Chemist Hospital Panchkula. Avoid Gotras: Mittan, Kharb, Dahiya, Kadyan. Cont.:08146082832.
- SM4 Jat Boy (DOB 14.09.1986) 28.8/5'11" . Working as Senior Engineer in MNC Noida with Rs.10 lac PA. Preferred working match. Avoid Gotras: Tanwar, Jakhar, Sheoran. Cont.:08284050424
- SM4 Jat Boy 27/5'7" BDS Doctor, Own plot and home in Try-city and landed property in Karnal. Avoid Gotras: Narwal, Malik, Ghanghas. Cont.:09417359925

क्रमांक : जा0स0भ0-2015/अनुदान-41 दिनांक : 10/06/2015

विषय : मानव कल्याण के लिए विशेष अपील।

सादर प्रणाम,

जाट सभा चंडीगढ़/पंचकुला (गैर राजनैतिक सामाजिक संस्था) मानव सेवा एवं समाज कल्याण के विभिन्न सामाजिक-कल्याणकारी कार्यक्रमों के आयोजन के लिए सदैव लग्नशील व तत्पर रहती है। इस संदर्भ में सभा की कार्यकारिणी द्वारा नेपाल, बिहार, उज़र प्रदेश में आए भंयकर भूकंप के शिकार एवं पीड़ितों को आर्थिक सहायता प्रदान करने व इस त्रासदी से बेघर हुए असंज़्य व्यक्तियों के पुनर्वास हेतू आर्थिक सहायता प्रदान करने का निर्णय लिया गया है।

गत 7 जून 2015 को सभा के माननीय प्रधान का सभा के शिष्टमंडल सहित जस्टिस प्रीतमपाल, पूर्व न्यायधीश पंजाब एवं हरियाणा उच्च न्यायालय व वर्तमान लोकायुक्त हरियाणा द्वारा आयोजित किए गए महायज्ञ के दौरान समारोह के मुज़्य वक्ता, स्वंय सेवी-धार्मिक संस्था (वेद विद्या शोध संस्थान) पीपली जिला कुरूक्षेत्र के संचालक स्वामी संपूर्णानंद के साथ समाज सेवा/मानवसेवा पर विचार विमर्श हुआ। यह संस्था गरीब बच्चों व बेसहारा व्यक्तियों की आर्थिक मदद करने के इलावा नेपाल में भूकंप पीड़ितों के लिए न्यूनतम कीमत पर घर बनाने का कार्य कर रही है। यज्ञ समारोह के दौरान सभा के माननीय प्रधान द्वारा जाट सभा की ओर से भूकंप पीड़ितों के लिए पुनर्वास हेतू मकान बनाने के लिए 'वेद विद्या शोध संस्थान' को फौरी तौर से एक लाख रूपये का अनुदान देने के इलावा सुझाव दिया गया कि नेपाल में भुकंप पीड़ितों के लिए आवास बनाने का कार्य जारी रखा जाए और इसके लिए जाट सभा चंडीगढ़ अपना भरपूर आर्थिक सहयोग प्रदान करती रहेगी। अतः इस संस्था द्वारा नेपाल में बनाए जाने वाले मकानों पर जाट सभा चंडीगढ़/पंचकुला का नाम अंकित होगा जिससे सभा व समाज की नेपाल देश में भी पहचान बनेगी।

इसलिए आपसे निवेदन है कि नेपाल भूकंप त्रासदी के पीड़ितों को आर्थिक सहायता प्रदान करने व इस प्रलय के कारण बेघर हुए असंज़्य असहाय व्यक्तियों के पुनर्वास हेतू बढ़-चढ कर आर्थिक सहायता प्रदान करें। इस पुनित कार्य के लिए सभा के माननीय प्रधान द्वारा सर्वप्रथम 11 हजार रूपये का अनुदान दिया गया है। जाट सभा को अनुदान स्वरूप भेजी जाने वाली राशी नकद, सभा के एचडीएफसी बैंक बचत खाता नं0 50100023714552 (IFSC Code-HDFC0001324) में जमा करवाने के इलावा 'जाट सभा चंडीगढ़' के नाम चैक/बैंक ड्राफ्ट के माध्यम से प्रेषित की जा सकती है जो कि आयकर अधिनियम 1961 की धारा 80-जी के तहत आयकर से मुक्त है। आपसे यह भी निवेदन है कि सभा द्वारा चलाए जा रहे विभिन्न सामाजिक व कल्याणकारी कार्यक्रमों की जानकारी हेतू आप अपना ईमेल पता इस कार्यालय को भेजें।

यह अपील जाट सभा चंडीगढ़ के प्रत्येक आजीवन सदस्य को डाक द्वारा व्यक्तिगत तौर से पहले भेजी जा चुकी है और दोबारा जाट लहर पत्रिका के माध्यम से प्रत्येक आजीवन सदस्य व आप सभी से पुनः अपील की जाती है कि समाज कल्याण के इस पुनीत कार्य के लिये यथा शीघ्र अपना भरपूर आर्थिक योगदान जाट सभा चंडीगढ़ को भेजने का कष्ट करें ।

आदर सहित।

भवदीय,
(राजकपूर मलिक)
महासचिव

अपवित्र भावना उतनी ही बुरी है जितना कि अपवित्र कार्य -विवेकानन्द

उपलब्धि : एशियन कुश्ती चैंपियनशिप में किरण ने रजत व अंजू ने कांस्य जीत प्रदेश का नाम किया रोशन

निडानी खेल स्कूल की खिलाड़ियों ने जीते मेडल

विजेता खिलाडी अंजू व किरण

चौधरी भरत सिंह मलिक मेमोरियल स्पोर्ट्स स्कूल निडानी की दो खिलाड़ी छात्राओं ने हाल में ही नई दिल्ली में चल रही जूनियर एशियन कुश्ती चैंपियनशिप में मेडल जीतकर देश का नाम रोशन किया है। 49 किलोग्राम भार वर्ग में किरण माथुर ने सिल्वर मेडल तथा 43 किलोग्राम भार वर्ग में अंजू दूहन ने कास्य पदक जीता है। उनकी जीत से स्कूल में खुशी का माहौल है।

मामूली अंतर से हारी

11 से 14 जून तक नई दिल्ली में चल रही सब जूनियर एशियन कुश्ती चैंपियनशिप में किरण माथुर ने कजाकिस्तान की खिलाड़ी को हराकर समीफाइनल में जगह बनाई। समीफाइनल में मंगोलिया की खिलाड़ी को हराकर फाइनल में प्रवेश किया। डीपीआर कोरिया की खिलाड़ी से मामूली से अंतर से हारने के बाद सिल्वर मेडल प्राप्त किया। अंजू दूहन ने 43 किलोग्राम भार कुश्ती वर्ग में चीन की खिलाड़ी को हराकर कास्य पदक जीतकर एशियन चैंपियनशिप में देश का परचम लहराने का काम किया। सी.बी.एस.एम संस्थान के डायरेक्टर सुखबीर पघाल ने बताया कि खिलाड़ियों की उपलब्धी पर विद्यालय के साथ-साथ पूरे क्षेत्र के लोगों में खुशी का माहौल है। खिलाड़ियों के स्कूल आगमन पर भव्य स्वागत समारोह किया जाएगा। जिसमें स्कूल के सरंक्षक पूर्व डीजीपी डा. महेंद्र सिंह मलिक व संस्थान की चेयरपर्सन कृष्णा मलिक पहुंचकर खिलाड़ियों को समानित करके हौंसला बढ़ाने का काम करेंगे।

भाई सुरेंद्र सिंह मलिक मेमोरियल स्पोर्ट्स स्कूल की प्राचार्या राजवंति मलिक ने बताया कि स्कूल में छात्राओं की जीत की इस उपलब्धी पर सभी खिलाड़ियों अन्य स्टाफ को भरपूर खुशी जाहिर करते हुए मिठाई बांटी। इस अवसर पर संस्था के सचिव रणधीर सिंह श्योरण, आनंद लाठर, पूर्व सरपंच दलीप सिंह मलिक, रामचंद्र, सतबीर मौजूद थे।

हमें जिन पर गर्व है

जाट सभा चंडीगढ़/पंचकूला के आजीवन सदस्य श्री राकेश कुमार गिल के सुपुत्र प्रीत सिंह गिल ने सैन्टरल बोर्ड आफ सैकेन्डरी एजूकेशन द्वारा आयोजित 12वीं की परिक्षा 2015 में 90 प्रतिशत अंक प्राप्त किये।

इनकी शानदार सफलता पर जाट सभा चंडीगढ़/पंचकूला इनके उज्जवल भविष्य की कामना करती है।

सम्पादक मंडल

संरक्षक : डा. एम.एस. मलिक, आई.पी.एस. (सेवानिवृत)
सम्पादक : श्री गुरनाम सिंह, आई.एफ.एस. (सेवानिवृत)
सह–सम्पादक : डा॰ राजवन्तीमान
साज सज्जा एवं आमुख : श्री आर. के. मलिक
प्रकाशन समिति : श्री बी.एस. गिल, मो० : 9888004417
श्री जे.एस. ढिल्लो, मो० : 9416282798
वितरक : श्री प्रेम सिंह, कार्यालय सचिव, जाट भवन, चण्डीगढ़

जाट भवन 2–बी, सैक्टर 27–ए, चण्डीगढ़
फोन : 0172–2654932 फैक्स : 0172–2641127
Email : jat_sabha@yahoo.com

Postal Registration No. CHD/0107/2015-2017

RNI No. CHABIL/2000/3469

मुद्रक प्रकाशन एवं सम्पादक गुरनाम सिंह ने जाट सभा, चंडीगढ़ के लिए एसोशियटिड प्रिन्टर्ज़, चंडीगढ़, फोन : 0172–2650168 से मुद्रित करवा कर जाट भवन, 2-बी, मध्यमार्ग, सैक्टर 27-ए, चंडीगढ़ से प्रकाशित किया।